اللہ کے رسولؐ نے ارشاد فرمایا۔
میں اچھے اخلاق کو مکمل کرنے کے لئے بھیجا گیا ہوں
(مؤطہ اِمام مالک:705)

With Best Compliment from

sagar

SAGAR FEEDS & FOODS PROCESSING INDUSTRIES

Plot No. L-21, Gidc Concolim Industrial Estate
Concolim-403703 GOA
Email: sagarffpi@gmail.com

www.kanti.in

संपादक
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ वार्षिक 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ पांच वर्ष 1500/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
+91 8920589292

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
संपादक: शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 31 अंक 03 सितम्बर 2021

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

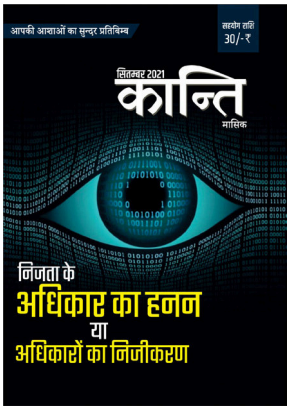

कान्ति मासिक

इस अंक में

मूल 04
धर्मांधता और सच्ची धार्मिकता में अंतर
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
मूल्य और नैतिकता की बहस
मोहसिन नवाज़

सौंदर्य बोध 09
'हसीन सूरत चन्द रोज़, हसीन सीरत...
शीरीन मारिया

मुख्य स्तंभ 11
निजता के अधिकार का हनन या अधिकारों का निजीकरण
डॉक्टर नफ़ीस अख़्तर

जन-गण-मन 15
काला धन: गंभीर मुद्दों की राजनीति
मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

अभिव्यक्ति के ख़तरे 19
वेब सीरीज़ की दुनिया: कला को 'एडल्ट' होने के बजाए 'मैच्योर' होने की ज़रूरत
प्रिय दर्शन

समाज 23
ज़िम्मेदारियों के निर्वाह से ही संभव होगा ग़रीबी उन्मूलन
डॉ. मुहियुद्दीन ग़ाज़ी

नारी विमर्श 27
नारीवाद को एक नई भाषा की...
मुसब क़ाज़ी

विश्व पटल 30
मिस्र से लोकतंत्र को उखाड़ फेंकने वाली ताक़तें ट्यूनीशिया में भी सक्रिय
मसऊद अब्दाली

दर्शन 32
मानसिक अवसाद: मज़हबी फ़िक्र एक बड़ा सहारा
मुत्तलिब मिर्ज़ा

कविता 35
ताबूत
ओसामा हमीद

पुस्तक-समीक्षा 37
हिंदुत्व की सार्वजनिक स्वीकृति के लिए संघ के प्रयास
शबीउज़्ज़मां

करियर 41
अनुभव और मार्गदर्शन अच्छे करियर में...
संपादन प्रभाग

दुनिया मेरे आगे 43
डिजिटल दुनिया का बनावटी कल्चर
डॉक्टर मुबाशिरा फ़िरदौस

कहानी 45
आर्ट का पुल
फ़हीम आज़मी

आख़िरी पन्ना 50
आलोचना और सब्र
शेख़ मुहम्मद आमिर क़ुरैशी

मूल प्रश्न



धर्मांधता और सच्ची धार्मिकता में अंतर



शिब्ली अरसलान

देश में उन्माद का माहौल कम होने का नाम नहीं ले रहा, कभी थोड़ी शांति की फ़िज़ा बनती हुई दिखाई देती है तो विभिन्न प्रदेशों में चुनावी मौसम आ जाते हैं, फलतः फिर उन्मादी फ़िज़ा उफान पर आ जाती है। पिछले दिनों दिल्ली के द्वारका और जंतर-मंतर से लेकर कानपुर तक जो घटनाएं हुईं वो बेहद हृदयविदारक हैं। दिल्ली में संसद के निकटतम स्थल जंतर-मंतर पर कथित 'देश जोड़ो आन्दोलन' के बैनर तले जिस पागलपन और सनक का प्रदर्शन हुआ या द्वारका में हज हाउस के लिए अधिग्रहित ज़मीन के विरुद्ध जो माहौल बनाया गया या फिर कानपुर में एक ग़रीब मुस्लिम रिक्शा चालक पर उकसाई गई भीड़ द्वारा जो हमला हुआ, ये सारे कुकृत्य यद्यपि धर्म रक्षा के नारों के साथ और धार्मिक प्रतीकों के सहारे अंजाम दिए गए, मगर वास्तव में सच्ची धार्मिकता से इनका कोई लेना-देना नहीं है।

धर्मांधता और सच्ची धार्मिकता में अंतर नहीं समझने के कारण लोग ये कह बैठते हैं कि इन घटनाओं की जड़ में धर्म है। हालांकि थोड़ी भी समझ-बूझ से काम लिया जाए तो कोई भी समझ सकता है कि धर्म का इस नफ़रत, वैमनस्य और उन्माद से क्या संबंध..! कुछ तो धर्म के नाम पर, अधर्मियों द्वारा इतना अन्याय और कुकृत्य किया गया है कि लोग धर्म को उन्माद का कारण समझने लगे हैं, फिर ये समझाने में यूरोपी सेक्युलरवाद के झंडावाहकों का भी बड़ा हाथ है, जिसने जान-बूझकर मज़हब को शत्रु के तौर पर पेश किया और सारा दोष और गुनाह मज़हब के खाते में डाल दिया। इसके लिए शिक्षा और साहित्य से लेकर कला एवं संस्कृति तक का ऐसा संगठित इस्तेमाल किया गया कि प्रतीकात्मक धार्मिकता के तबलावादक जो धर्म को व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रखने और सामाजिक व राजनीतिक जीवन से धर्म को निकाल-बाहर करने की वकालत करने लगते हैं, वे भी ये समझने लगे हैं कि धर्म भी कहीं न कहीं उन्माद सिखाता है। साम्प्रदायिक उन्माद को 'धार्मिक उन्माद' का नाम देकर धर्म के विरुद्ध दुष्प्रचार तेज़ कर दिया जाता है। आप ये कह सकते हैं कि उन्मादियों में बाबा और धर्माचार्य जैसे लोग भी नज़र आते हैं जो तोड़ने और ज़हर फैलाने की

बात करते हैं, इसका क्या? हमें ये बात अच्छी तरह समझनी और समझानी पड़ेगी कि मज़हब सिद्धांतों और मूल्यों का नाम है, राजनीतिक सत्ता से उपकृत ऊर्जावान कुछ मुट्ठी भर कथित धर्माचार्यों की ज़हरीली सोच से धर्म

सच्ची धार्मिकता का संबंध निम्न बातों से है...

1. ईश्वर को इस सृष्टि का स्रष्टा और इंसानों का रचयिता और पालनहार समझते हुए उससे टूट कर मुहब्बत और उसकी अवज्ञा से बचने की फ़िक्र।

2. इंसानों को ईश्वर की अनुपम कृति समझते हुए, पूरी मानवता को एक कुन्बा समझना।

3. सत्य की तलाश के लिए संसार और मनुष्य की फ़ितरत पर ग़ौर व फ़िक्र अथवा ज्ञान ध्यान।

4. न्याय, करुणा और प्रेम पर विशेष ज़ोर।

5. इस जीवन के बाद वाले जीवन की अवधारणा पर गहरा विश्वास और उसमें बुरे परिणाम का डर।

की व्याख्या नहीं हो सकती। प्रोपेगंडा और एजेंडा के इस दौर में धर्म को लेकर इतना धूल-धक्कड़ उड़ाया गया है कि सच्ची धार्मिकता की पहचान मुश्किल हो गई है, महज़ वेश-भूषा और नारों व बयानों को धर्म समझ लिया जाता है। निस्संदेह धर्मों के बीच भिन्नताएं हैं, मगर मूल रूप से उनमें बहुत से मूल्य समान व साझा हैं। जब आप धर्मों के मध्य कॉमन पॉइंट्स तलाश करेंगे तो आप देखेंगे कि इस सृष्टि के रचयिता और स्रष्टा ने इस धरती के विभिन्न हिस्सों में मानवता के मार्गदर्शन के लिए जो ज्ञान और जीवन संहिता भेजा वो मूल रूप से एक ही है। लोगों के विशुद्ध भौतिक स्वार्थ, सत्तालोलुप्ता ने इस मार्गदर्शन को इतना परिवर्तित किया कि हम आज इस स्थिति में पहुंच गए। क़ुरआन कहता है 'आरंभ में सारे इंसान एक ही उम्मत अर्थात् समूह थे, फिर वो इख्तिलाफ़ में पड़ गए' (सूरः यूनुस-19)। इस सत्य को भला कौन नकार सकता है कि धरती पर रहने वाले सारे इंसान एक ही मां-बाप की संतान हैं, सारे धर्मावलंबियों के निकट ईश्वर एक है जिसने इस संसार को बनाया और इंसानों की रचना की... अतः धर्मों की रूह भी एक है और सच्ची धार्मिकता की पहचान भी एक जैसी है। अगर कोई ईमानदारी से चिंतन और विश्लेषण करे तो वो इस नतीजे पर अवश्य पहुंचेगा कि सच्ची धार्मिकता और साम्प्रदायिकता एक-दूसरे की घोर विरोधी है।

सच्ची धार्मिकता का संबंध निम्न बातों से है...

1. ईश्वर को इस सृष्टि का स्रष्टा और इंसानों का रचयिता और पालनहार समझते हुए उससे टूट कर मुहब्बत और उसकी अवज्ञा से बचने की फ़िक्र।

2. इंसानों को ईश्वर की अनुपम कृति समझते हुए, पूरी मानवता को एक कुन्बा समझना।

3. सत्य की तलाश के लिए संसार और मनुष्य की फ़ितरत पर ग़ौर व फ़िक्र अथवा ज्ञान ध्यान।

4. न्याय, करुणा और प्रेम पर विशेष ज़ोर।

5. इस जीवन के बाद वाले जीवन की अवधारणा पर गहरा विश्वास और उसमें बुरे परिणाम का डर।

अंत में...

मौजूदा माहौल में जबकि उन्माद की फ़िज़ा ख़ौफ़नाक बनती जा रही है और मज़हब का चोला पहनकर मज़हब को बदनाम किया जा रहा है, सच्ची धार्मिकता की बात करने वालों को निम्न काम करने होंगे...

1. धर्म के ख़ौफ़नाक विद्रुपीकरण का संज्ञान लिया जाए, सच्ची धार्मिकता की बात करने वाले विद्वान और दर्दमंद स्कॉलर्स आगे आएं।

2. धर्म के कथित हित रक्षक बनने के बजाए, सच्ची धार्मिकता जीवन में पैदा हो, इसके लिए ईश्वर की सृष्टि और अपनी फ़ितरत पर ज्ञान ध्यान की फ़िज़ा बननी चाहिए।

3. धर्म जो संवेदनशीलता पैदा करता है, उसे बहाल रखने की कोशिश, जंतर-मंतर और कानपुर जैसी घटनाओं पर सर्वधार्मिक समाज का मुखरता के साथ प्रतिकार।

4. जीवन के सौंदर्य और रहस्य पर विमर्श।

5. व्यक्तिगत मर्ज़ी और विवेक की स्वतंत्रता का आदर, इससे धार्मिक स्वतंत्रता की फ़िज़ा बनेगी, उन्माद की फ़िज़ा स्वतः ख़त्म होगी।

6. सच्ची धार्मिकता की रक्षा और उन्माद की फ़िज़ा को ख़त्म करने के लिए संवाद और सहयोग का मार्ग अपनाया जाए। याद रखें धार्मिक इंसान उन्मादी नहीं हो सकता और धर्मांध कभी विवेकवादी नहीं हो सकता। अतः आज बड़ी ज़रूरत इसकी है कि धर्म के अपहरणकर्ताओं से धर्म को मुक्त किया जाए! ■■



Phon No:03322353850

Hameed & Co

Handloom Retailers













39, Rabindra Sarani, Chittaranjan Avenue, Kolkata - 700072

चिंतन



मोहसिन नवाज़

मूल्य और नैतिकता की बहस

मानव इतिहास पर निगाह डालिए तो ये बनाव और बिगाड़ का हैरतअंगेज़ सफ़र नज़र आता है। जब से मानव चेतना ने आंख खोली है उसकी सारी कोशिशों का ख़ुलासा ये नज़र आएगा कि वो समाज में अमन व शांति क़ायम करना चाहती है। लेकिन ये बात जो हम ने अपने बुज़ुर्गों से सुनी थी कि समाज कुफ़्र (ईश्वर का इंकार) पर तो क़ायम रह सकता है लेकिन अन्याय पर नहीं, शत- प्रतिशत सही है यानी सुकून व अमन के लिए इन्साफ़ लाज़मी शर्त है, मगर इन्साफ़ की ये शर्त तब तक पूरी नहीं की जा सकती जब तक समाज के सारे लोग कुछ नैतिक मूल्यों पर सहमत न हो जाएं। इसी को वर्तमान युग के दार्शनिकों (philosophers) ने Social Contract कहा है। लेकिन ये मूल्य (values) कहां से आते हैं और कैसे पैदा होते हैं, ये वो बुनियादी सवाल है जिसे हमें निष्पक्ष होकर समझने की कोशिश करनी चाहिए। इस सवाल के दो तरह से जवाब दिए जाते हैं।

पहला जवाब जो धार्मिक तबक़े की जानिब से दिया जाता है, ये है कि ये मूल्य किसी अदृश्य ताक़त की जानिब से इंसानों को revelation के ज़रिए दिया जाता है जिसमें इंसानों का अपना कुछ भी हुनर, मेहनत और तजुर्बा शामिल नहीं होता यानी कि revelation से एक लम्हे पहले तक उन्हें इस बात का ज़रा-सा भी इल्म नहीं होता कि "सही क्या है और ग़लत क्या"? अचानक वाक़फ़ियत का होना ही साइंस की दुनिया में एक हैरानी की बात थी, मगर वाक़फ़ियत के साथ-साथ आत्मीयता और मोहब्बत का इस



क़दर हो जाना कि इन मूल्यों के लिए जान जैसी अनमोल चीज़ का क़ुरबान कर देना दूसरा सवाल पैदा करता है। फिर इस सवाल का जवाब कुछ यूं दिया जाता है कि इन्सान के अन्दर अच्छाई और बुराई की तमीज़ रख दी गई है। मूल्य की समझ उसके अन्दर In-built है, उसे इंसानी फ़ितरत कहा जाता है लेकिन ज़िन्दगी के इस कठिन सफ़र में उसकी याद्दाश्त धूमिल हो जाती है फिर पैग़म्बर उस तस्वीर से धूल हटाते हैं तो उस तस्वीर के सारे रंग खिल जाते हैं और इन्सान उसकी तरफ़ दौड़ता है।

अब इन्सानी फ़ितरत को समझने के लिए फ़ितरत की ऐसी स्पष्ट मिसालों को देखना होगा जिसे इन्सानों पर अप्लाई किया जा सके। फ़ितरत की सबसे खुली मिसाल चरिंद और परिंद हैं।

मुर्ग़ी का बच्चा अण्डे से निकलते ही ख़ुश्की की तरफ़ दौड़ता है और बतख़ के बच्चे को घेर कर ख़ुश्की की तरफ़ लेकर जाओ तब भी पानी की तरफ़ दौड़ेगा। बकरी का बच्चा भूखा मर जाएगा लेकिन गोश्त नहीं खाएगा, इनके विपरीत इंसानी बच्चा उतनी ही बेख़ौफ़ी से ज़हर की डलि मुह में रख लेगा जैसे मिश्री की डलि, कभी पानी में गिर जाएगा तो कभी आग के शोलों को पकड़ लेगा।

दुनिया की सारी सजीव प्राणियां अपनी फ़ितरत का शऊर लेकर पैदा होती हैं लेकिन इन्सान blank CD की तरह है। ये बात भी कही जा सकती है कि जैसे जैसे इन्सान बढ़ता है वैसे-वैसे उसकी फ़ितरत जो उसमें in-built है वो भी विकसित होती है, लेकिन ये बात भी तजुर्बे के ख़िलाफ़ है। इन्सान जब और जहां जैसी सोसाइटी में रहता है वैसे ही Values and Morality इख़्तियार कर लेता है। मिसाल के तौर पर यूरोप में परवरिश पाए नौजवान के लिए Live-in-Relationship में कोई दिक़्क़त नहीं है, लेकिन हमारे यहां एक बहुत बड़ा मसला पैदा हो जाएगा। LGBT Rights, Divorce या इस जैसी ढेरों मिसालें दी जा सकती हैं जो उनकी Value and Morality के लिए ठीक है लेकिन हमारे लिए ग़लत है। और जो बच्चे जंगल में जानवरों के बीच तर्बियत पाते हैं वो बिल्कुल हैवानी सतह पर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। Values तो दूर की बात वो भाषा, प्यार और Sex जैसी बुनियादी चीज़ों से भी वाक़िफ़ नहीं रहते हैं। इस बात से ये पता चला की इन्सान के अन्दर ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसे सही रास्ते की तरफ़ हिदायत दे।



इन्सान के अंदर शर और ख़ैर यानी बुराई व अच्छाई दोनों की सलाहियत रख दी गई है।अब वो चाहे तो शर (बुराई) की सींचाई करे और फ़िरऔन और नमरूद बन जाए या ख़ैर (भलाई) की सलाहियत को विकसित करे। वास्तव में इन्सानी ज़िन्दगी का मक़सद इन्हीं सलाहियतों का विकास है।

इसी वजह से इन्सान आंतरिक नहीं बल्कि बाह्य रहनुमाई का मोहताज है। अब ये रहनुमाई किसी गुरु के ज़रिए तालीम व तर्बियत के रास्ते से होगा या नबी व पैग़म्बर द्वारा मज़हब के रास्ते से, इसका संबंध Social Conditioning और तालीम व तर्बियत से है।

अब रहा ये सवाल कि क़ुरआन की सूरह अल-शम्स की आयत 8 का क्या अर्थ है?

इस आयत का मतलब सिर्फ़ ये है कि इन्सान के अंदर शर और ख़ैर यानी बुराई व अच्छाई दोनों की सलाहियत रख दी गई है। अब वो चाहे तो शर (बुराई) की सींचाई करे और फ़िरऔन और नमरूद बन जाए या ख़ैर (भलाई) की सलाहियत को विकसित करे। वास्तव में इन्सानी ज़िन्दगी का मक़सद इन्हीं सलाहियतों का विकास है। ■■

सौंदर्य बोध



शीरीन मारिया

‘हसीन सूरत चन्द रोज़, हसीन सीरत मुस्तक़िल’

ख़ुदा की इस मनमोहक दुनिया में, हर जगह आप सौंदर्य और सुंदरता की उत्कृष्ट कृतियों को देख सकते हैं। देखने वाली आंख और एहसास रखने वाला दिल इसके कण-कण से लुत्फ़ उठाता है। प्रकृति का रहस्योद्घाटन, चमत्कार और सौंदर्य हर जगह अपनी सुंदरता बिखेर रहे हैं। मौसमों का चक्र, चांद सितारे, उगता-ढलता सूरज, आकाश गंगा, दरिया व समुद्र, फ़स्ल व गुल क्या ऐसा नहीं जो आंखों को चकाचौंध और दिल को मज़बूत न करे। इस सारी सुंदरता का आनंद लेने और इसे रूह में उतारने की एक ही शर्त है कि आदमी की दृष्टि में फैलाव हो।

यही वह आंख है जिससे देखकर एक ईमान वाला आदमी बिना किसी अवरोध के अल्लाह हु अकबर और सुब्हान अल्लाह कहकर अपने ख़ुदा की महानता और उसकी बड़ाई का एलान करता है।

ख़ुदा की अनगिनत कृतियों में इंसान सबसे अच्छा और सम्मानीय रचना है। ख़ुदा ने इंसान को श्रेष्ठतम प्राणि की उपाधी से नवाज़ा और बताया कि हमने मनुष्य को सर्वोत्तम ऊंचाई पर पैदा किया। वह ख़ुदा जिसके काम में कोई दोष नहीं है, कोई नुक्स नहीं उसकी कृतियों में यह इंसान,जो ख़ाक का पुतला है उसे ख़ुद रब ‘अहसन तक़वीम’ अर्थात् सबसे बेहतर संरचना कहता है।

यह बेहतरीन संरचना में पैदा होने वाली रचना (मनुष्य) आज सबसे ज़्यादा अपने आपको लेकर चिंतित है। कुछ लोग अपने लुक को लेकर बेचैन और असन्तुष्ट हैं, कोई अपने रंग से नाख़ुश है, किसी को अपने क़द से शिकायत है, तो किसी को अपनी आंखें नहीं भातीं, कहीं कोई अपनी नाक को खड़ा करने, उसको सही आकार देने के लिए दिन-रात एक करने को तैयार है!!

इस बेचैनी और चिंता से पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक ग्रसित दिखाई देती हैं। अच्छा दिखना और सजना-

ख़ुदा की अनगिनत कृतियों में इंसान सबसे अच्छा और सम्मानीय रचना है। ख़ुदा ने इंसान को श्रेष्ठतम प्राणि की उपाधी से नवाज़ा और बताया कि हमने मनुष्य को सर्वोत्तम ऊंचाई पर पैदा किया।

संवरना लड़कियों की स्वाभाविक इच्छा होती है, यह उनका वैध अधिकार भी है। लेकिन इसमें अगर बैलेन्स न हो तो यह बदसूरती को जन्म देती है, जिसका भुक्तभोगी आज हमारा समाज है, जहां ख़ूबसूरत दिखने और दिखाने की होड़ ने वास्तविक ख़ूबसूरती के मतलब को बदल दिया है।

समाज ने सौंदर्य को जो बनावटी जामा पहनाया है उसने सबसे पहले ख़ूबसूरती की वास्तविकता को चोट पहुंचाया है। इस दिखावे ने चिंता, बेचैनी और फ़िज़ूलख़र्ची के ऐसे दरवाज़े खोले जिसने सबसे पहले शर्म, सादगी, संतोष और कृतिज्ञता जैसे अनमोल उपहार को निगल लिया।

इस बनावटी दुनिया में काला रंग अनाथ की हैसियत रखता है। छोटा क़द एक दोष है। मामूली शक्ल सूरत को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता है। इस वजह से ख़ूबसूरती का बाजारीकरण आज अपने उठान पर है। गोरापन ख़रीद-बिक्री का वस्तु बन गया है। रंग निखारने वाले हज़ारों क्रीम और प्रोडक्ट की बाज़ार में भरमार है। हसीनतरीन नज़र आना वक़्त की अहम ज़रूरत बन गई है।

ब्यूटी पार्लर और हेयर सैलून में जहां कुछ घण्टों के लिए अच्छे दिखने के लिए हज़ारों-लाखों रुपये फूंकना आम बात है। सुंदरता की इस झूठी दुनिया ने अनिश्चितता और अविश्वास के बीज बोये। इसने हीनता की भावना को जन्म दिया, जिससे निराशा, असंतोष, हताशा और स्वयं की दूसरे से तुलना करने जैसी आदतें व्यक्तित्व का हिस्सा बनती चली गईं। नैतिकता और चरित्र, अच्छी आदतें और शिष्टाचार, चरित्र की सादगी जैसी चीज़ें अब पहली प्राथमिकता में नहीं हैं। ख़ुदा जिसने इंसान को बनाया उसके सामने इस बाहरी और बनावटी सुंदरता



"हे ख़ुदा! जिस तरह तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई, वैसे ही मुझे नैतिक बुलन्दी दे।" बनावटी सुंदरता के मुक़ाबले में नैतिक और चारित्रिक ख़ूबसूरती ही बाक़ी रहने वाली है। सूरत ढल सकती है, लेकिन सीरत यानी चरित्र बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

का कोई मूल्य नहीं है। उसके नज़दीक व्यक्ति के कर्म व चरित्र प्रशंसनीय हैं। वह कहता है कि वह तुम्हारे चेहरे और दौलत को नहीं देखता है, उसके पास तुम्हारे दिलों की क़द्र है। तभी ज़िंदगी जीने के जो ढंग बताए गए उसमें कर्म और चरित्र को प्राथमिकता दी गई। आईना देखते ही इंसान की ज़ुबान से जो शब्द निकलते हैं वह नैतिकता और चरित्र की ऊंचाई लिए होते हैं- "हे ख़ुदा! जिस तरह तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई, वैसे ही मुझे नैतिक बुलन्दी दे।" बनावटी सुंदरता के मुक़ाबले में नैतिक और चारित्रिक ख़ूबसूरती ही बाक़ी रहने वाली है। सूरत ढल सकती है, लेकिन सीरत यानी चरित्र बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

हसीन सूरत चन्द रोज़ हसीन सीरत मुस्तक़िल

इससे ख़ुश होती है आंखे उससे ख़ुश होता है दिल

इंसान अगर इस फ़र्क़ को समझ ले तो न असन्तोष होगा और न ही अकृतज्ञता होगी। आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होगी और वो अपनी वर्तमान स्थिति को भी ख़ुशी-ख़ुशी क़बूल करेगा। फिर उसे अपने बड़प्पन पर गर्व महसूस होगा और उसका दिल अपने ख़ुदा के प्रति कृतज्ञता से भर जाएगा। फिर व्यक्ति ख़ूबसूरती के बजाय कर्म और चरित्र को अपनी पहली प्राथमिकता में शामिल करेगा। इन सब चीज़ों के लिए बस एक चीज़ दरकार है-अन्तर्दृष्टि।। ■■

मुख्य स्तंभ

डॉ. नफ़ीस अख़्तर



निजता के अधिकार का हनन या अधिकारों का निजीकरण

निजता का अधिकार पुनः एक बार चर्चा का विषय बना हुआ है। कारण यह है कि संसद के मानसून सत्र से मात्र एक दिन पहले वाशिंगटन पोस्ट, दी गार्जियन और दी वायर जैसी अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता की 16 प्रतिष्ठित संस्थानों ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें फ्रांस स्थित फोर्बिडेन स्टोरीज़ और एमनेस्टी इंटरनेशनल के हवाले से ख़ुलासा किया गया था कि इसराईल के एक ग्रुप एनएसओ द्वारा निर्मित एक स्पाईवेयर पेगासस का प्रयोग करके दुनिया के विशेषकर दस देशों के पत्रकारों, राजनीतिज्ञों तथा समाजी कार्यकर्ताओं की जासूसी की गई है। भारत में संसद और उसके बाहर इस रिपोर्ट को लेकर हंगामा मचा हुआ है, क्योंकि पेगासस के क्लाइंट्स की जिन लोगों में दिलचस्पी थी, उनसे जुड़े 50,000 मोबाइल नंबरों का एक लीक डेटाबेस जो फोर्बिडेन स्टोरीज़ और एम्नेस्टी को प्राप्त हुआ है उनमें से लगभग तीन सौ नंबर भारतीय लोगों के हैं। इनमें प्रमुख रूप से राहुल गांधी, ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी, प्रशांत किशोर, आलोक वर्मा, राकेश अस्थाना, पूर्व इलेक्शन कमिश्नर अशोक लवासा, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैश्णव और सुप्रीम कोर्ट के पूर्व प्रमुख न्यायधीश रंजन गोगोई पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली महिला समेत कई प्रसिद्ध पत्रकारों और समाजी तौर पर सक्रीय लोगों के नाम शामिल हैं।

सिर्फ़ निजता के अधिकार के

हनन का मामला नहीं है, बल्कि इनमें कई और पहलू हैं जो इसको गंभीर और बेहद ख़तरनाक बनाते हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि यह जासूसी एक विदेशी कंपनी की मदद से की गई है जिसकी वजह से देश से संबन्धित कई संवेदनशील जानकारियां देश के बाहर लीक होने की आशंका पैदा हुई है। फिर भारत सरकार ने इस सवाल का कोई स्पष्ट जवाब अब तक नहीं दिया है कि उसने एनएसओ ग्रुप से पेगासस स्पाईवेयर ख़रीदा है या नहीं। यद्यपि रक्षा मंत्रालय ने एनएसओ ग्रुप से किसी भी तरह के लेन-देन से इंकार किया है, लेकिन ज़ाहिर है कि रक्षा मंत्रालय ही पूरी सरकार नहीं है। भारत सरकार पर संदेह इसलिए भी किया जा रहा है, क्योंकि एनएसओ ने यह कहा है कि साइबर वेपन की श्रेणी में आने वाला पेगासस स्पाइवेयर केवल सरकार अथवा सरकारी एजेंसियों को ही बेचते हैं। विपक्ष की मांग के बावजूद सरकार इस मामले की न्यायिक जांच गठित करने से मुकर रही है। यदि सरकार की इस मामले में संलिप्तता नहीं है तो यह प्रश्न और भी गंभीर हो जाता है कि सरकार के अतिरिक्त आख़िर कौन है जो इतने महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जासूसी कराना चाहता है? जबकि पेगासस जासूसी का संभवतः निशाना बनने वाले लोग ज़्यादातर वे हैं जो भाजपा के राजनैतिक अथवा वैचारिक विरोधी हैं या भाजपा सरकार को पूर्व में उनसे कोई न कोई समस्या रही है। जासूसी का यह मामला 2017 और 2019 के बीच का है, जिस दौरान लोकसभा चुनाव भी हुए थे। ऐसे में राहुल गांधी, अभिषेक बनर्जी और प्रशांत किशोर की जासूसी का राजनैतिक उद्देश्य आसानी से समझा जा सकता है। पूर्व इलेक्शन कमिश्नर अशोक लवासा ने अमित शाह और नरेन्द्र मोदी पर आचार संहिता के उल्लंघन करने का आरोप लगाया था उनका नाम भी जासूसी लिस्ट में शामिल है। इसके अलावा जय शाह की कंपनी में मात्र एक वर्ष में 16000 गुना वृद्धि का ख़ुलासा करने वाली फ्री लांस पत्रकार रोहिणी सिंह, राफेल डील विवाद को कवर करने वाले इंडियन एक्सप्रेस के पत्रकार सुशांत सिंह और सीबीआई के विवाद में शामिल पूर्व सीबीआई डायरेक्टर आलोक वर्मा तथा राकेश अस्थाना एवं



रंजन गोगोई पर आरोप लगाने वाली महीला का जासूसी किए जाने वालों में होना सरकार पर संदेह तो पैदा ही करता है। गोगोई पर सेक्सुअल हरासमेंट का एलीगेशन लगाने वाली महिला की जासूसी की संभावित घटना पूर्व मुख्य न्यायाधीश की ब्लैकमेलिंग किए जाने का भी शक पैदा करती है, क्योंकि इन्होंने ही बाद में राफेल डील प्रकरण में सरकार को क्लीन चिट दी थी। ऐसे में सरकार को पेगासस जासूसी मामले की निष्पक्ष जांच कराकर इन संदेहों पर रोक लगानी ही चाहिए।

भारत के संविधान में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची में शामिल किया गया है लेकिन यह अधिकार असीमित नहीं है अपितु कुछ ख़ास मामलों में विधिपूर्ण इंटरसेप्टिंग और सर्विलांस का सरकार को अधिकार हासिल है। वह ख़ास मामले हैं देश की संप्रभुता, अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी देशों के साथ मैत्री संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था और संज्ञेय अपराध की रोकथाम। लेकिन सर्विलांस से पूर्व केंद्र अथवा राज्य के ग्रह सचिव से अनुमति लेना आवश्यक है। अपरिहार्य स्थिति में गृह सचिव द्वारा अधिकृत संयुक्त सचिव और अन्य उच्च अधिकारी भी इसका आदेश दे सकते हैं और यदि यह आदेश न हो और इंटरसेप्शन के लिए तर्क और वजह को दर्ज न किया गया हो तो इसे अवैध और निजता के अधिकार का हनन माना जाएगा। ज़ाहिर है कि पेगासस मामले में किसी वैध प्रक्रिया के अनुसरण का प्रश्न ही नहीं उठता है। फिर विधिपूर्वक इंटरसेप्शन किसी स्पाईवेयर के माध्यम से नहीं, बल्कि किसी सर्विस प्रोवाइडर के माध्यम से किया जाता है। सरकार किसी ग़ैर-संबन्धित निजी संस्था को

भारत के संविधान में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची में शामिल किया गया है लेकिन यह अधिकार असीमित नहीं है अपितु कुछ ख़ास मामलों में विधिपूर्ण इंटरसेप्टिंग और सर्विलांस का सरकार को अधिकार हासिल है। वह ख़ास मामले हैं देश की संप्रभुता, अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी देशों के साथ मैत्री संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था और संज्ञेय अपराध की रोकथाम। लेकिन सर्विलांस से पूर्व केंद्र अथवा राज्य के ग्रह सचिव से अनुमति लेना आवश्यक है।

किसी के सिस्टम में हैक करने के लिए नहीं कह सकती है। फ्रांस और इसराईल की सरकारों ने मामले को गंभीरता से लेते हुए इसकी उच्च स्तरीय जांच का आदेश दे दिया है। क्योंकि संभावित जासूसी का निशाना बनने वालों में फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रोन का नाम भी शामिल है। लेकिन भारत सरकार निष्पक्ष जांच से भाग रही है जो संदेह पैदा करता है।

पेगासस स्पाईवेयर का नाम इससे पहले भी विवादों के घेरे में आ चुका है। 2019 में व्हाट्सएप ने कथित हैकिंग और जासूसी के आरोप में अमेरिका में इसके विरुद्ध मुक़दमा भी किया था। यह स्पाईवेयर किसी के फ़ोन में केवल एक मिसकाल के द्वारा (जिसका नोटिफिकेशन भी थोड़ी देर में ग़ायब हो जाता है) दाख़िल होकर उसके फ़ोन के सभी फंक्शन को अपने नियंत्रण में ले लेता है, और उस फ़ोन का प्रयोग करने वाले की अनुमति और जानकारी के बेगैर सारा डाटा, काल रिकार्ड, मैसेज, वीडियो, कान्टेक्ट डिटेल, इमेजेज़ और कैलेंडर आदि को स्पाईवेयर कंट्रोल सिस्टम को भेजता रहता है। यही नहीं बल्कि गुप्त रूप से कैमरा और माइक्रोफ़ोन ऑन करके उसकी निजी बातचीत का वीडियो तथा आडियो भी कंट्रोल सिस्टम को भेज सकता है। यह आसपास के सिस्टम अथवा डिवाइस को ब्लूटूथ की तरह सर्च करके भी उसमें दाख़िल हो सकता है। ऐसी सूरत में उसे लक्ष्य का फ़ोन नंबर भी जानने की ज़रूरत नहीं है। सऊदी अरब मूल के अमेरिकी पत्रकार जमाल ख़ाशोज्जी और मैक्सिको के फ्री लांस पत्रकार सेसिलियो पिनेडा ब्रिटो को भी कथित रूप से पेगासस स्पाईवेयर का निशाना बनाया गया था। इन दोनों की बाद में हत्या कर दी गई थी।

भारत सरकार ने जासूसी के लिए पेगासस का प्रयोग किया है या नहीं इस पर तो अभी स्पष्ट रूप से कुछ भी कह पाना संभव नहीं है। लेकिन सरकार पहले भी मास सर्विलांस की कई तकनिकों का या तो इस्तेमाल कर रही है या उसकी तरफ़ अपने क़दम बढ़ा रही हैं। सरकार ने मार्च में फैशियल रिकग्निशन (चेहरा पहचानने की) तक्नीक से युक्त सर्विलांस के उपयोग की बात कही थी। एक ऐसे समय में जब यूरोपियन यूनियन और कई अमेरिकी राज्यों सहित दुनिया के बहुत से लोकतंत्र फैशियल रिकग्निशन तकनीक का उपयोग या तो कम से कम या बंद कर रहे हैं भारत उसको अपनाने की और तेज़ गति से बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीयकृत निगरानी प्रणाली (सीएमएस), नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड और नेटरा (NETRA) परोजेक्ट के द्वारा भी सरकार भारत को एक सम्पूर्ण जननिगरानी वाले राज्य (Mass Surveillance State) में परिवर्तित कर रही है। अर्थात् जार्ज ओरवेल के नोवेल 1984 में उल्लिखित ओरवेलियन स्टेट का भारत एक सजीव उदाहरण बनता जा रहा है।

साईबर वर्ल्ड में आम नागरिक की निजता की सूरक्षा के लिए आवश्यक है कि डाटा प्रोटेक्शन की क़ानूनी गारंटी भारत के नागरिकों को प्राप्त हो। हर तरफ़ से उठने वाली इस मांग को देखते हुए सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के एक सेवानिवृत्त जज जस्टिस बीएन श्रीकृष्ण के नेतृत्व में एक कमेटी का गठन किया था जिसने जुलाई 2018 में पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल का ड्राफ्ट तैयार किया, जिसे कैबिनेट की स्वीकारता के पश्चात लोकसभा में टेबल किया गया था जो अब संयुक्त संसदीय समिति के विचाराधीन है, लेकिन उस

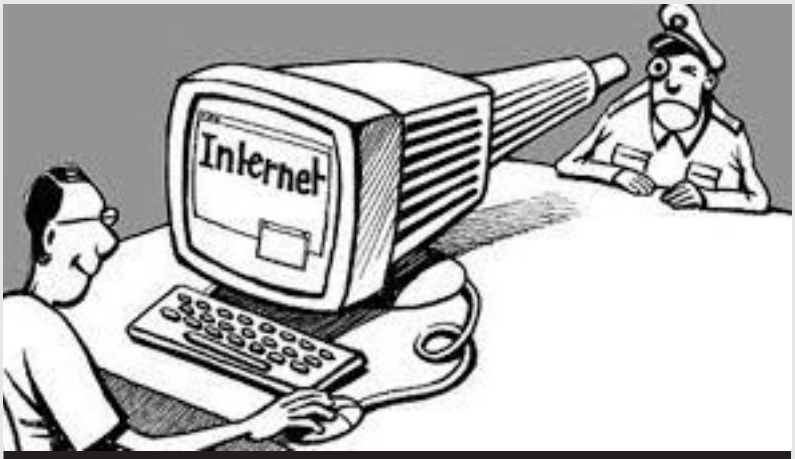

यदि सरकार की इस मामले में संलिप्तता नहीं है तो यह प्रश्न और भी गंभीर हो जाता है कि सरकार के अतिरिक्त आख़िर कौन है जो इतने महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जासूसी कराना चाहता है? जबकि पेगासस जासूसी का संभवत: निशाना बनने वाले लोग ज़्यादातर वे हैं जो भाजपा के राजनैतिक अथवा वैचारिक विरोधी हैं या भाजपा सरकार को पूर्व में उनसे कोई न कोई समस्या रही है।

बिल में अब तक इतने संसोधन किए जा चुके हैं कि उसकी ड्राफ्टिंग करने वाले बीएन श्रीकृष्ण के अनुसार इस बिल में अब भारत को एक ओरवेलियन राज्य में बदल देने की पूरी क्षमता मौजूद है, क्योंकि यह संशोधन सरकार को यह अधिकार देते हैं कि वह अपनी एजेंसियों को इस बिल के कुछ या सभी प्रावधानों से मुक्त कर सके।

हालांकि सरकार को यह अधिकार भारत की संप्रभुता, अखंडता, राज्य की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, विदेशों से मैत्रीपूर्ण संबंध तथा अपराध की रोकथाम के उद्देश्य से पहले भी हासिल था, लेकिन इसके लिए कुछ क़ानूनी सेफगार्ड प्रणाली और निरीक्षण तंत्र के प्रावधान दिए गये थे। सरकार ने इन प्रावधानों को हटा दिया है और अब सरकार किसी भी समय निजी तथा सरकारी एजेंसियों के डाटा को बेरोक टोक एक्सेस कर सकती है। समस्या यह है कि आईटी एक्ट की धारा 69 में इंटरसेप्शन और डाटा एक्सेस के जो आधार दिए गए हैं वे इतने विशाल और व्यापक हैं कि सरकार दुनिया की हर चीज़ को उसमें शामिल कर सकती है।

भारत की संप्रभुता, सुरक्षा और अपराध की रोकथाम की इतने बड़े मापदंड हैं कि उसमें सरकार की इक्षानुसार सब कुछ सम्मिलित किया जा सकता है। धारा 69 में जो पर्याप्त निगरानी, संतुलन और पारदर्शिता होनी चाहिए वह मौजूद नहीं है। ऐसे में सिर्फ़ एक पेगासस प्रकरण ही नहीं, बल्कि व्यापक पैमाने पर आम नागरिकों की निजता को सुरक्षा प्रदान करने के लिए ठोस क़दम उठाए जाने की आवश्यक्ता है। अन्यथा Always keep in mind that your big brother is watching you. ■■

जन-गण-मन



मुहम्मद यूसुफ़
'मुन्ना'

काला धन: गंभीर मुद्दों की राजनीति

देश में काला धन को लेकर बहस काफ़ी पुरानी है। काले धन के प्रवाह पर रोक लगाने से लेकर विदेशों में जमा धन को देश में वापस लाने का वादा अनेक सियासी दलों ने किया, लेकिन यह वादा मात्र चुनावी मुद्दा बनकर रह गया। आश्चर्य इस बात की है कि देश की अर्थव्यवस्था को खोखला करने वाले इतने गंभीर मुद्दे को 'सियासी' बना दिया गया।

काला धन को मुद्दा बनाकर सत्ता में आई मोदी सरकार ने इस पर लगभग हाथ खड़े कर दिए। संसद में सरकार के जवाब के बाद से इस मुद्दे पर एक बार फिर चर्चा शुरू हो गई कि आख़िर भाजपा ने किस आधार पर काला धन लाने का लम्बा-चौड़ा वादा और दावा किया था।

ग़ौरतलब है कि गत जुलाई 2021 में लोकसभा में काले धन पर पूछे गए एक सवाल के जबाव में वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि सरकार के पास पिछले दस सालों में स्विस बैंक में जमा काले धन का कोई आधिकारिक आंकड़ा नहीं है। उन्होंने यह कहा कि सरकार ने काला धन



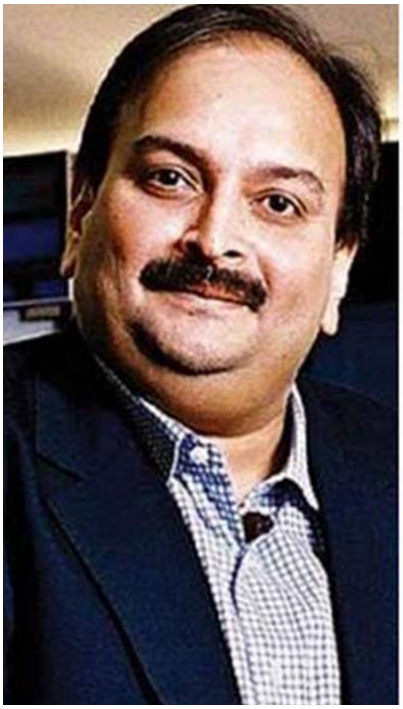



वापस लाने के लिए अनेक कोशिशें की, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि उन कोशिशों का नतीजा क्या निकला?

2014 से पहले भाजपा ने तत्कालीन मनमोहन सरकार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाते हुए स्विज़ बैंक में जमा काले धन का मुद्दा उठाया था। भाजपा की इस मुहिम को अन्ना आंदोलन से काफ़ी समर्थन मिला। उस समय अपनी चुनाव सभा में नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि जो चोर-लुटेरों के पैसे विदेशी बैंकों में जमा हैं, हम उन्हें भारत में ले आएं तो एक-एक ग़रीब आदमी को मुफ़्त में 15-20 लाख रुपए मिलेंगे। चुनाव के बाद लोगों को यह समझ में आया कि जिस सरकार को यह पता ही नहीं कि विदेशी बैंकों में कितना काला धन जमा है, उसने उनसे 15-15 लाख देने का वादा कर वोट ले लिया।

दूसरे शब्दों में कहें तो लोगों को लालच देकर वोट लिया गया। मज़े की बात यह है कि जिस सरकार को यह नहीं पता कि विदेशों में कितना काला धन है, उसने काले धन को वापस लाने के लिए एसआईटी का गठन किया था। इसके बाद यह पता नहीं चल सका कि इस मामले में एसआईटी ने कितनी प्रगति की।

काला धन देश से बाहर भेजने का सिलसिला रुका नहीं, इस बात का ख़ुलासा हुआ पनामा पेपर लीक मामले। मीडिया में आयी सूची के मुताबिक़ पनामा गेट के नाम से जाने जाने वाले इस मामले में अमिताभ बच्चन, उनकी बहु ऐश्वर्या बच्चन, गौतम अडानी के भाई विनोद अडानी, पूर्व सॉलीसिटर जनरल और वकील हरीश साल्वे समेत दर्जनों लोगों के नाम सामने आए। इनमें उन लोगों की बड़ी संख्या थी जो मोदी की नीतियों के समर्थक थे। जैसे फ़िल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन, जिनको मनमोहन सरकार में पेट्रोल-डीजल महंगे लगते थे, लेकिन अब महंगे नहीं लगते। पनामा पेपर लीक मामले में जिन लोगों के नाम सामने आए, उनके ख़िलाफ़ सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। पनामा पेपर लीक मामले में इंटरनेशलन कंसोर्शियम ऑफ़ इन्वेस्टीगेशन ने क़रीब 13 लाख दस्तावेज़ों की जांच की जिनमें क़रीब 12 हज़ार दस्तावेज़ भारतीयों से संबंधित थे। इससे दो साल पहले सामने आए मोस्साक फांसेका के दस्तावेज़ों में क़रीब 5 सौ भारतीयों के नाम सामने आए थे। बैंकों को चूना लगाकर विदेश भागने वाले उद्योगपतियों की सच्चाई से लोग परिचित हैं ही। बिना ऊपर तक पहुंच के कोई देश नहीं छोड़ सकता, वह भी तब जब इस तरह की घटनाओं को लेकर सरकार पहले से सजग हो।

ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशनल की सूची के मुताबिक़ देश में भ्रष्टाचार की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। सवाल यह है कि सरकार अगर विदेशों में जमा काले धन के बारे में पता नहीं कर पा रही या उनको ला नहीं पा रही तो कम से कम काले धन के जमाख़ोरी और उसके प्रवाह पर रोक लगा ही सकती है। इस काम में कौन-सी मजबूरी उसके आड़े आ रही है?

एक ओर जहां भ्रष्टाचार की अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में देश शीर्ष की ओर बढ़ रहा है, वहीं सरकारी संस्था नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ पब्लिक पॉलिसी एंड फ़ाइनेंस की रिपोर्ट कहती है कि 1997-2009 के बीच देश से बाहर जाने वाले धन के सकल घरेलू उत्पाद का सात फ़ीसद तक होने की संभावना है।

इसी संबंध में नेशनल काउंसिल ऑफ़ अप्लाइड इकॉनोमिक रिसर्च की रिपोर्ट कहती है कि 1980 से 2010 के बीच क़रीब 384 से लेकर 490 अरब डॉलर के बीच धन देश के बाहर गया है। ऐसा कहा जा सकता है कि इस रिपोर्ट में बताया गया सभी धन 'काला' नहीं रहा होगा, लेकिन इससे इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि पूरा धन 'सफ़ेद' ही होगा।



2014 के बाद से विजय माल्या, नीरव मोदी समेत 50 से ज़्यादा उद्योगपति बैंकों का करोड़ों रुपया लेकर विदेश फ़रार हो गए। काला धन की बात छोड़ भी दें तो फ़रार हो चुके इन उद्योगपतियों को देश में वापस लाने और उनसे बक़ाया वसूलने का सरकार का वादा, वादा ही रहा।

2014 के बाद से विजय माल्या, नीरव मोदी समेत 50 से ज़्यादा उद्योगपति बैंकों का करोड़ों रुपया लेकर विदेश फ़रार हो गए। काला धन की बात छोड़ भी दें तो फ़रार हो चुके इन उद्योगपतियों को देश में वापस लाने और उनसे बक़ाया वसूलने का सरकार का वादा, वादा ही रहा। इनको देश में वापस लाने और उनसे वसूली करने में सरकार की कौन मजबूरी आड़े आ रही है।

अभी तक सरकार ने काले धन के प्रवाह को रोकने और उसे बाहर निकालने के लिए जो उपाय अपनाए वह ऊंट के मुंह में ज़ीरा साबित हुआ। सरकार ने काले धन को वैध ठहराने वाली कुछ योजनाओं का ऐलान किया, जिनमें इनकम डिक्लेयेरेशन स्कीम, वॉलंट्री डिस्क्लोज़र स्कीम, टैक्स रेट कम करने की स्कीम आदि, लेकिन उनकी दशा खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली ही रही। विपक्षी कांग्रेस ने सरकार की इन स्कीम का 'कोलगेट स्कीम' कहकर मज़ाक़ बनाया। सत्ता में आते ही मोदी सरकार ने बिना सोचे-समझे नोटबंदी का एलान कर दिया। कहा गया कि इससे भ्रष्टाचार की कमर टूट जाएगी। विपक्षियों की मानें तो नोट बंदी का फ़ायदा ख़ुद सत्ताधारी दल के अनेक लोगों ने उठाया और अच्छी कमाई कर ली। सबसे ज़्यादा नुक़सान आम जनता का हुआ। उसको कई सप्ताह बैंकों की लाइन में लगना पड़ा। कुछ लाइन में मर गए, कुछ ने ख़ुदकुशी कर ली।

मीडिया हमेशा की तरह सरकार की ओर से बैटिंग करता रहा और नोटबंदी को मोदी का 'मास्टर स्ट्रोक' बताता रहा। इसका एहसास लोगों को बाद में हुआ कि नोटबंदी से न तो भ्रष्टाचार रुका, न उसकी कमर टूटी, न काला धन बाहर आया और न उसका प्रवाह रुका। आंकड़े यह साबित करने के लिए काफ़ी हैं कि 2014 के बाद से विदेशी बैंकों में काला धन और बढ़ा है। दावा करने और काम करने में बहुत अंतर है और यह अंतर मोदी सरकार में स्पष्ट नज़र आता है। जो भाजपा विपक्ष में रहकर सरकार के नाक में दम किए हुए थी, आज उसी की सरकार में वित्त मंत्रालय में प्रमुख आर्थिक सलाहकार रह चुके अरविंद विरमानी का कहना है कि सरकार से सवाल इस तरह किए जाते हैं मानो वित्त मंत्रालय किसी अनुसंधान की जगह है। ऐसे भी इस सरकार में सवाल करने की संभाना बहुत सीमित है। कुल मिलाकर काले धन जैसे गंभीर मामले को सियासी बना दिया गया। ■■

ADVANCE HEART CARE CENTRE PRIVATE LIMITED

Advance Heart Care Centre Private Limited is a Private incorporated on 12 February 2018. It is classified as Non-govt company and is registered at Registrar of Companies, Mumbai. Its authorized share capital is Rs. 100,000 and its paid up capital is Rs. 100,000. It is inolved in Social work activities

Advance Heart Care Centre Private Limited's Annual General Meeting (AGM) was last held on 30 September 2019 and as per records from Ministry of Corporate Affairs (MCA), its balance sheet was last filed on 31 March 2019.





Directors of Advance Heart Care Centre Private Limited are Sumera Mehreen Aziz Khan and Mohd Aziz Islamullah Khan.

Advance Heart Care Centre Private Limited's Corporate Identification Number is (CIN) U85300MH2018PTC304990 and its registration number is 304990.
Its Email address is rcncongp2@gmail.com and its registered address is House No. 22, Dhantoli NAGPUR Nagpur MH 440012 IN ,
Current status of Advance Heart Care Centre Private Limited is - Active.

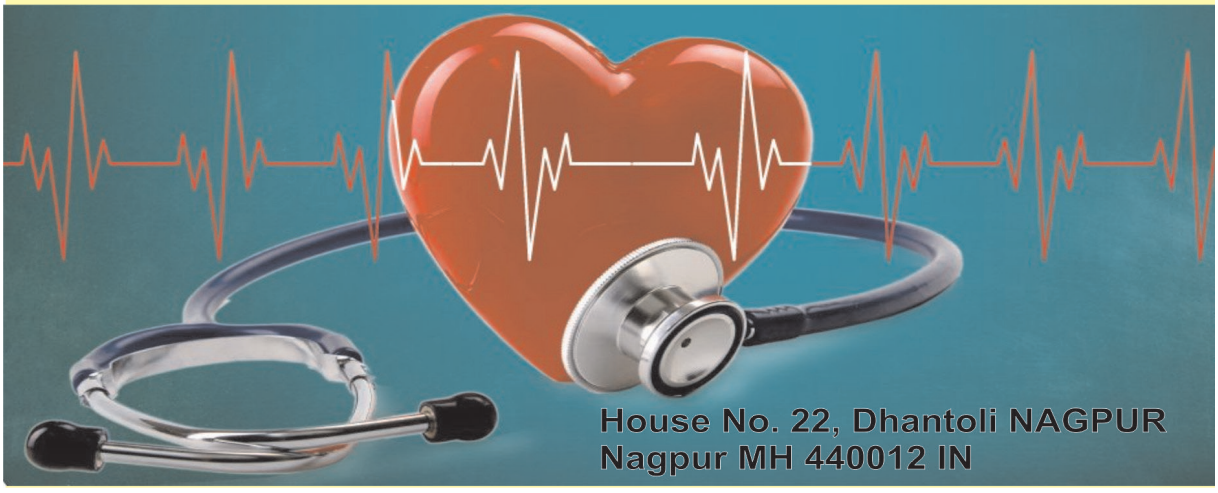



अभिव्यक्ति के खतरे



प्रिय दर्शन

वेब सीरीज़ की दुनिया

कला को 'एडल्ट' होने के बजाए 'मैच्योर' होने की ज़रूरत

पिछले दिनों किसी ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर आ रही एक वेब सीरीज़ में जब पहली बार एक गंदी गाली सुनी तो मेरे कान लाल हो गए। लगा कि इसे परिवार के साथ देखना मुश्किल है। लेकिन बीते एक महीने में अब कान लाल होना बंद हो गए हैं। गंदी गालियां आम लगने लगी हैं। हम इन दिनों सपरिवार इन गालियों के बीच वेब सीरीज़ का लुत्फ़ उठा रहे हैं। इस प्रक्रिया को हम किस तरह देखें? ऐसा नहीं कि हमने पहली बार गंदी गालियां सुनी हैं। बचपन में गलियों और सड़कों में खेलते हुए इन्हें ख़ूब सुना, कभी-कभी किसी झल्लाहट, झगड़े या ग़ुस्से में इन्हें दोहराया भी। लेकिन यह समझ बनी रही कि गालियां अच्छी चीज़ नहीं हैं – उनमें मां और बहनों की गंदी अवमानना छुपी है। (आज की तरह स्पष्ट मुहावरे में तो नहीं, लेकिन अवचेतन में कहीं यह बात बसी थी कि अच्छा लड़का होने की एक निशानी स्त्रियों का सम्मान करना भी है।) लेकिन अब ये गालियां मुझे चुभतीं क्यों नहीं? कान इनके आदी क्यों हो गए हैं? क्या इनमें जो चुभने वाला तत्व था, वह निकल गया है? या वह हमारे अभ्यास का मामला बन गया है। यानी पहले हम इन गालियों की ध्वनि भर से जिस जुगुप्सा से भर जाते थे, वह हमारे लिए अब सामान्य बात हो गई है? क्या यह हमारी संवेदनशीलता को चुपचाप बदल देने का काम है? मनोरंजन और कारोबार की दुनिया पहले भी यह काम करती रही है। वह बहुत सावधानी से देखती है कि हम कितनी अश्लीलता धीरे-धीरे सहने के आदी हो रहे हैं, वह हमारे सौंदर्यबोध,

हम जाने-अनजाने ऐसे समाज में बदलते जा रहे हैं जो शब्दों और ध्वनियों को उनके अर्थों-प्रभावों के साथ ग्रहण करने का अभ्यास खो रहा है। एक विराट पूंजी वाली कॉर्पोरेट दुनिया द्वारा विकसित किया जा रहा यह मनोरंजन उद्योग बहुत सूक्ष्मता के साथ हमारा संवेदन तंत्र नष्ट कर रहा है।

हमारी संवेदनशीलता का परीक्षण करती चलती है और पैमाना ऊंचा करती जाती है।

इन गालियों पर एतराज़ करने के दो ख़तरे हैं। पहला ख़तरा उन शुद्धतावादी और पवित्रतावादी लोगों का है जो बहुत उत्साह से आपके साथ खड़े हो जाते हैं और याद दिलाने लगते हैं कि किस तरह उनकी संस्कृति को चोट पहुंचाने का षड्यंत्र चल रहा है, कि कैसे पश्चिम की पतनोन्मुख संस्कृति भारत की महान संस्कृति को अपदस्थ कर रही है। इसके बाद वे साफ़-सुथरी हिंदी की बात करने लगते हैं – याद दिलाते हुए कि हमारी भाषा कैसे प्रदूषित हो गई है, कि कैसे उसमें तत्सम शब्दों की जगह पहले उर्दू के शब्द आए और अब गालियां आ रही हैं। वे यह भी बताएंगे कि ये गालियां उर्दू से हिंदी में आई हैं।

इन लोगों को फिर भी नज़रअंदाज़ किया जा सकता है। इनके हमले हमारी तरह के लोग पहले से झेलते रहे हैं। संकट तब खड़ा होता है जब गालियों को बालिग़ होने की निशानी बताने वाले विशेषज्ञ आकर हमें भी शुद्धतावादियों के ख़ाने में धकेल देते हैं। वे फ़ौरन याद दिलाने लगते हैं कि कई शास्त्रीय किताबों और फ़िल्मों में भी गालियों का इस्तेमाल हुआ है। उन्हें लगता है कि ये कुछ संस्कारी क़िस्म के लोग हैं जिनके घुटने गालियां सुनकर कांपने लगते हैं।

लेकिन इन प्रतिक्रियाओं में भाषा की वह सूक्ष्म भूमिका अनदेखी रह जाती है जो पूरी सभ्यता में हमारे साथ चलती रही है। हम ही भाषा को नहीं बनाते, भाषा भी हमें बनाती है। उसकी कई परतें होती हैं। हम एक ही भाषा अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग ढंग से बरतते हैं। मां के साथ हमारी बोली कुछ होती है, पिता के साथ कुछ और। दोस्तों के साथ कुछ और होती है और शिक्षकों के साथ कुछ और। यह भाषा हमें बनाती भी है और बदलती भी है। साहित्य पढ़ते हुए हमें कभी तत्सम शब्दों का लालित्य छूता है, कभी उर्दू शब्दों की रवानी, और कभी-कभी देसी शब्दों का ठाठ। फ़िल्म देखते हुए हम मुग़ल-ए- आज़म की भाषा से भी चमत्कृत होते हैं और तीसरी क़सम की भाषा से भी।

इसलिए जब हम वेब सीरीज़ की गालियां सुन और उनको सुनने का अभ्यास कर रहे होते हैं तो हमारे भीतर कुछ बदल रहा होता है। बच्चों और युवाओं के भीतर तो निश्चय ही। हमारी तरह के अधेड़ों के भीतर भी प्रतिक्रियाएं कई बार उन्हीं शब्दों में आकार लेने लगती हैं।

लेकिन अगर ऐसा होता भी है तो इसमें एतराज़ या अफ़सोस की बात क्या है? बस यही कि धीरे-धीरे हम वह मनुष्य नहीं रह जा रहे हैं जो ख़ुद को मानते हैं या बनाना चाहते हैं। वह मर्दवाद हमारे भीतर फिर से पलने लगता है जो न जाने कितनी सदियों से बैठा हुआ है और जिसे धीरे-धीरे हम खुरच कर निकालने की कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि इन सारी गालियों के केंद्र में या तो स्त्रियां हैं या फिर निचली जातियां। आप लाख कहें कि ये आम बोलचाल की भाषा है और इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता, लेकिन ये गालियां एक स्तर पर कहीं न कहीं हमारी संवेदना को कुंठित करती चलती हैं। ऊपर की कहानियों का सरोकार अलग होता है, अवचेतन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का सत्य अलग। हम पाते हैं कि चुपचाप एक पतनशील मर्दवाद इसके भीतर से सक्रिय होता चलता है। यह अनायास नहीं है कि कई प्रचलित वेब सीरीज़ में पुरुष अपनी आक्रामक भूमिकाओं के बावजूद बहुत कोमल दिखाए जाते हैं और स्त्रियां अपने सारे द्वंद्व के बावजूद समस्या से घिरी या साज़िश करने वाली नज़र आती हैं।

इसके दो उदाहरण पिछले दिनों चर्चित हुई दो वेब सीरीज़ में देखे जा सकते हैं। मनोज वाजपेयी की 'फ़ैमिली मैन' बहुत दूर तक नायक के पक्ष में झुकी नज़र आती है। यह नज़र आता है कि नायक के भीतर जो तकलीफ़ है वह परिवार को समय न दे पाने और ख़ुश न रह पाने की है, जबकि नायिका के भीतर दुख अपना करियर न बना पाने का है और बाद में एक अपराध बोध है जो शायद किसी रेखा के पार करने का है, हालांकि निर्देशक ने इसे अभी तक खोला नहीं है। इसी तरह 'काठमांडु कनेक्शन' की टीवी एंकर नायिका दरअस्ल एक आतंकवादी की दोस्त निकलती है जो

उसके साथ साज़िश करके एक देशभक्त पुलिस वाले की 'चूक' की सज़ा उसे बरसों बाद देती है।

ऐसे उदाहरण और भी मिल सकते हैं। यह भी बस संयोग नहीं है कि इन दोनों वेब सीरीज़ के केंद्र में देशभक्ति और राष्ट्रवाद है और इनके प्रति प्रतिबद्ध नायक कहीं अपनी प्रेमिकाओं द्वारा छले जा रहे हैं, कहीं अपनी पत्नियों द्वारा सताए जा रहे हैं। इन सब हालात के बावजूद वे अपनी बेटी को बचाने का मसीहाई पराक्रम करते हैं और इसके तत्काल बाद राष्ट्र प्रमुख के सामने आया संकट दूर करते हैं।

इन दिनों सोशल मीडिया पर सक्रिय देशभक्तों और राष्ट्रवादियों को देखिए तो उनके भीतर ग़द्दारों और देशभक्तों को मां-बहन की गालियां देने का नैतिक साहस कहां से आता है? निस्संदेह उन नायकों (और नायिकाओं) से भी जो ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म की फ़िल्मों और वेब सीरीज़ में जमकर गाली बकते हैं और अपनी देशभक्ति को बिल्कुल ज़मीनी सच्चाई बना डालते हैं।

चाहें तो इसके दूसरे पक्ष पर भी विचार कर लें। क्या इन गालियों के पीछे कोई कला-दृष्टि है? यथार्थ को दिखाने का आग्रह? यह एक जाना-पहचाना और बहुत दूर तक वैध तर्क है कि अगर ये गालियां समाज में मौजूद हैं तो फ़िल्मों या कला-माध्यमों में इनके इस्तेमाल में क्या बुराई है? अगर हम सड़क के आवारा लड़कों की बातचीत दिखा रहे हैं तो उनके मुंह से गीता के श्लोक नहीं, गालियां ही निकलेंगी। लेकिन श्लोक हों या गालियां–उनका मक़सद क्या है? यथार्थ को यथार्थ की तरह पेश करने का मतलब यथार्थ पेश कर देना नहीं होता है। यानी किसी की गर्दन काटने का दृश्य हो तो इसके लिए गर्दन काटने की ज़रूरत नहीं पड़ती है, अगर सिनेमा में कोई बलात्कार का दृश्य हो तो इसके लिए किसी लड़की का बलात्कार नहीं कराया जा सकता। ज़ाहिर है, कला की चुनौती यही है कि वह जीवन के क्रूर यथार्थ को जस का तस प्रस्तुत करने की प्रविधियां विकसित करे न कि उस क्रूर यथार्थ के दृश्य को ही प्रस्तुत करके संतुष्ट हो जाए। इससे फिर दृश्य बचा रहता है, उसकी विभीषिका ख़त्म हो जाती है।

गालियों के साथ भी यही हो रहा है।

दरअस्ल ध्यान से देखें तो गालियों को वेब सीरीज़ या फ़िल्मों में इस्तेमाल करने के आग्रह के पीछे कलागत मजबूरी नहीं, यह व्यावसायिक नज़र है कि किशोरों और युवकों को ये गालियां कुछ उसी तरह खींचेंगी जैसे पोर्न साहित्य या सिनेमा खींचता है।

किसी फ़िल्म में वाक़ई कान झनझनाने लायक़ कोई स्थिति पैदा करनी हो और एक गाली दी जाए तो फिर भी समझ में आता है, लेकिन वे आम-फ़हम ज़ुबान का हिस्सा बनती जा रही हैं–कई बार शक होता है कि वे जीवन से ज़्यादा फ़िल्मों में इस्तेमाल की जा रही हैं।

दरअस्ल ध्यान से देखें तो गालियों को वेब सीरीज़ या फ़िल्मों में इस्तेमाल करने के आग्रह के पीछे कलागत मजबूरी नहीं, यह व्यावसायिक नज़र है कि किशोरों और युवकों को ये गालियां कुछ उसी तरह खींचेंगी जैसे पोर्न साहित्य या सिनेमा खींचता है। यह भी इत्तिफ़ाक़ नहीं है कि अमूमन ये गालियां वे फ़िल्मकार या कॉमेडियन लेकर आ रहे हैं जिनकी पृष्ठभूमि हिंदी की नहीं है। इन लोगों को हिंदी गालियां अपना तथाकथित आभिजात्य तोड़ने का ज़रिया भी लगती हैं और देश का विशाल अनपढ़ या अधपढ़ निम्न मध्यवर्गीय नौजवान वह दर्शक जिसके पास एक मोबाइल और छोटा रिचार्ज करा सकने भर पैसे हैं।

लेकिन फिर दोहराना होगा–गालियों की यह नई तहज़ीब हमारी संवेदनशीलता पर भी चोट कर रही है।

हम जाने-अनजाने ऐसे समाज में बदलते जा रहे हैं जो शब्दों और ध्वनियों को उनके अर्थों-प्रभावों के साथ ग्रहण करने का अभ्यास खो रहा है। एक विराट पूंजी वाली कॉर्पोरेट दुनिया द्वारा विकसित किया जा रहा यह मनोरंजन उद्योग बहुत सूक्ष्मता के साथ हमारा संवेदन तंत्र नष्ट कर रहा है। आज हम इन गालियों को स्वीकार कर रहे हैं, कल को पोर्न सिनेमा पर भी मुहर लगाएंगे–बिना यह समझे कि यह आक्रामक ध्वन्यात्मकता बहुत सपाट दृश्यमयता के साथ मिलकर एक छिछला संवेदन-संसार बना रही है। और इसकी वजह से मन की जो ख़ाली जगह बची रह जा रही है, उसे देशभक्ति और राष्ट्रवाद की चाशनी में लिपटी कहानियों से भरा जा रहा है–आख़िर 'फैमिली मैन' वहीं से तो आ रहे हैं।

आख़िरी बात–कला के लिए 'एडल्ट' या बालिग़ होने से ज़्यादा ज़रूरी 'मैच्योर' यानी परिपक्व होना है। कई बार लगता है, बालिग़ होने की हड़बड़ी में ये लोग परिपक्व होना भूल गए हैं। ■■

(लेखक NDTV इंडिया में एक्ज़ीक्यूटिव एडिटर हैं।)

Alhelal Hospital Pvt Ltd

الهلال ہاسپیٹل

Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj, Darbhanga

Alhelal Hospital Pvt Ltd in Darbhanga. Hospitals with Address, Contact Number, Photos, Maps. View Alhelal Hospital Pvt Ltd, Darbhanga on Justdial.

Whereabouts and Overview:

Among the finest Hospitals in the city, Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj, Darbhanga is known for offering excellent patient care.

The clinic is located centrally in Rahamganj, a prominent locality in the city. It stands close to Near Bibi Pakar which not only makes it convenient for people from the vicinity to consult the doctor but also for those from other neighbourhoods to seek medical guidance.

There is no dearth of public modes of transport to reach the clinic from all major areas of the city.

Whereabouts and Overview:

Among the finest Hospitals in the city, Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj, Darbhanga is known for offering excellent patient care.

The clinic is located centrally in Rahamganj, a prominent locality in the city. It stands close to Near Bibi Pakar which not only makes it convenient for people from the vicinity to consult the doctor but also for those from other neighbourhoods to seek medical guidance.

There is no dearth of public modes of transport to reach the clinic from all major areas of the city.

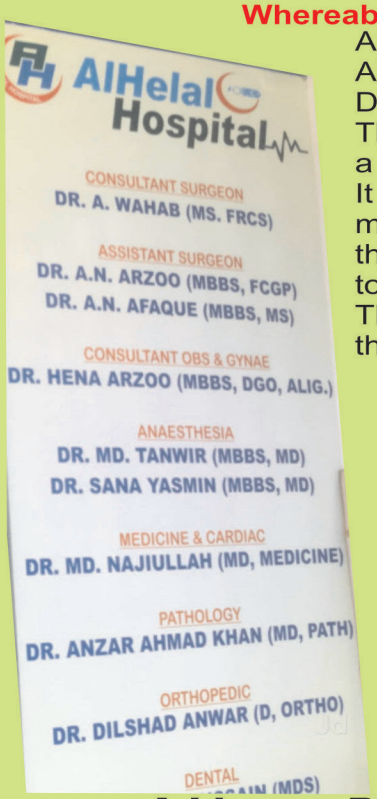





Address : Bibi Pakar, Karamganj, Darbhanga, Bihar, India, 846003

Phone No. :9308547048

Email :alhelalhospital.dbg@gmal.com

Official website : http://www.alhelalhospital.com/

समाज

ज़िम्मेदारियों के निर्वाह से ही संभव होगा ग़रीबी उन्मूलन

डॉ. मुहियुद्दीन ग़ाज़ी



ग़रीबी उन्मूलन का काम बहुत अहम और ज़रूरी है, इसलिए उसे राज्य की ज़िम्मेदारी क़रार देने से पहले व्यक्ति की ज़िम्मेदारी क़रार दिया गया। अगर कहीं इस्लामी राज्य है तो उस राज्य की ज़िम्मेदारी होगी कि वह राज्य के संसाधन और जनता द्वारा दी गई राशि को जमा करके ग़रीबी उन्मूलन के लिए इस्तेमाल करे। लेकिन अगर कहीं इस्लामी राज्य क़ायम नहीं है तो वहां लोग अपनी सतह पर व्यक्तिगत और सामूहिक कोशिशों के ज़रिये ग़रीबी उन्मूलन की अपनी ज़िम्मेदारी अदा करें गे। फ़रमाया गया : "और उन के मालों में हक़ है मांगने वालों और महरूम के लिए।" (51 : 19)

"जिनके मालों में, मांगने वालों और महरूमों का एक हक़ मुक़र्रर है।" (70 : 24-25)

ग़रीब भी ग़रीबी उन्मूलन में हिस्सा लें

ग़रीबी उन्मूलन का मिशन इतना अहम है कि इसे केवल मालदारों के हवाले नहीं किया गया, बल्कि ग़रीबों को भी ताकीद की गई कि जहां तक मुम्किन हो इस में हिस्सा लें।

"और वे अपने आप पर दूसरों को तर्जीह देते हैं चाहे अपनी जगह ख़ुद मुहताज हों।" (59 : 9)

अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने हज़रत आइशा से कहा आग से बचने का सामान कर लो, चाहे आधी खजूर से, कि वह भी भूखे की कुछ भूख मिटा देती है। (मुस्नद अहमद) अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने फ़रमाया जिसके पास सफ़र का खाना पानी ज़रूरत से ज़्यादा हो वह उसे दे दे जिसके पास सफ़र का खाना पानी नहीं हो। (मुस्लिम)

ग़रीबी उन्मूलन में हिस्सादारी रब से वफ़ादारी है

"वफ़ादारी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि वफ़ादारी यह है कि आदमी अल्लाह को और आख़िरत के दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब और उस के पैग़म्बरों को दिल से माने और अल्लाह की मुहब्बत में अपना दिलपसंद माल रिश्तेदारों और यतीमों पर, मिस्कीनों और मुसाफिरों पर, मदद के लिए हाथ फैलाने वालों पर और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और नेक वे लोग हैं कि जब वादा करें तो उसे पूरा करें, मुसीबत के समय में और हक़ और बातिल की लड़ाई में सब्र करें। ये हैं सीधे रास्ते पर चलने वाले लोग और यही लोग मुत्तक़ी

हैं।" (2 : 177)

इस आयत में पहले ईमान का तफ़सीली ज़िक्र है फिर सदक़ा का तफ़सीली ज़िक्र है। ईमान की मांग है कि माल की ख़ाहिश रखने के बावजूद उसे मज़कूरा लोगों पर ख़र्च किया जाये। इस के बाद दोबारा नमाज़ कायम करने के साथ ज़कात देने का ज़िक्र है। यानी नमाज़ का यह हक़ है कि ज़कात उसके साथ-साथ रहे। यह आयत यह भी बताती है कि ईमान वाले के पास दौलत होती है तो वह ग़रीबों पर ख़ूब ख़र्च करते हैं और जब नादारी घेर लेती है तो सब्र करते हैं।

ग़रीबी के सिलसिले में अपना मौक़िफ़ तय करें

ग़रीबी उन्मूलन की चिन्ता एक समझे-बूझे फ़ैसले के तहत इन्सानी रवैये का हिस्सा बन जाए। अपने ख़र्च का दायरा ज़रूरतों तक सीमित करके ग़रीबों की मदद की जाए। किसी भी मद में ख़र्च करते हुए ये ज़रूर सोचें कि यहां ख़र्च करना ज़्यादा ज़रूरी है या किसी ग़रीब को देना। यह काम संतुलन के साथ हो कि अपनी और घर वालों की ज़रूरतों की अनदेखी न हो।

ग़रीबी उन्मूलन का आन्दोलन खड़ा करें

क़ुरआन मजीद में उकसाने और प्रेरणा देने का ज़िक्र केवल ग़रीबों को खाना खिलाने के सिलसिले में आया है। इन तीनों आयतों पर ग़ौर करें-

"और वे मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे।''(74:44)

"और वह मिस्कीन को खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देता था।''(69 : 34)

"और तुम मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उक्साते।''

(89 : 18)

पहली आयत में मुशरिकों का जुर्म यह बताया गया कि वे मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते, दूसरी आयत में उनका जुर्म यह बताया गया है कि वे मिस्कीन को खाना खिलाने पर उक्साते नहीं हैं। और तीसरी आयत में उनका जुर्म यह बताया गया कि वह एक दूसरे को इस के लिए उक्साते नहीं हैं। मालूम हुआ कि इस्लाम यह ज़रूरी क़रार देता है कि आदमी मिस्कीन को खाना ख़ुद खिलाए, दूसरों को इस पर उकसाए और ऐसा समाज तैयार हो जिसमें सब एक दूसरे को इस पर उकसाएं। ज़ाहिर है जहां ये हालत पैदा हो जाएगी वहां ग़रीबी के बाक़ी रह जाने का कोई सवाल नहीं।

ग़रीबी उन्मूलन के लिए समझ-बूझ ज़रूरी

ग़रीबों के अंदर कमाने का शौक़ पैदा किया जाए। उस के रास्ते दिखाए जाएं। कौंसलिंग के प्रोग्राम किए जाएं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तुम में से कोई अपनी रस्सियां ले, पहाड़ पर जाये, अपनी पीठ पर लकड़ियों का बोझ लाद कर लाए, उसे बेचे, और उस की क़ीमत से अपनी ज़रूरतें पूरी करे। यह उस से बेहतर है कि वह लोगों के सामने हाथ फैलाए, वे उसे दें या मना कर दें।' (बुख़ारी) यह भी फ़रमाया "अपने हाथ की कमाई से बेहतर खाना किसी ने नहीं खाया, अल्लाह के नबी दाऊद अपने हाथ की मेहनत का खाना खाते थे।' (बुख़ारी) यह भी फ़रमाया, "तुम में से किसी के लिए रिज़्क़ का कोई दरवाज़ा खुल जाये तो वह उसे थामे रहे, छोड़े नहीं।" (बैहक़ी)

- ग़रीबों के अंदर सही जगह ख़र्च करने की समझ पैदा की जाए। (इस समय बड़ी कंपनियों के ज़रिये ग़रीबों के अंदर भी फ़ुज़ूलख़र्ची को बढ़ावा देने की मुहिम चलाई जा रही है।
- उन रस्मों के चंगुल से ग़रीबों को बाहर निकाला जाये जिनमें फंस कर

ग़रीबी उन्मूलन की चिन्ता एक समझे-बूझे फ़ैसले के तहत इन्सानी रवैये का हिस्सा बन जाए। अपने ख़र्च का दायरा ज़रूरतों तक सीमित करके ग़रीबों की मदद की जाए। किसी भी मद में ख़र्च करते हुए ये ज़रूर सोचें कि यहां ख़र्च करना ज़्यादा ज़रूरी है या किसी ग़रीब को देना। यह काम संतुलन के साथ हो कि अपनी और घर वालों की ज़रूरतों की अनदेखी न हो।

ग़रीब कर्ज़ों में गिरफ़्तार हो जाते हैं।

● बदलते हुए हालात पर नज़र रखी जाये, और समाज को ग़रीबी के चंगुल में फंसने से पहले होशियार किया जाये।

● व्यसपार और उद्योग के पुराने तरीक़ों के बजाय नये और ज़्यादा कारामद तरीक़ों की ओर ध्यान दिया जाये।

● रोज़गार की स्कीमें और प्रोग्राम बनाए जाएं। मुहल्ले, गांव, शहर और ज़िला की सतह पर मुहिम मनाई जाए।

● पेशों से जुड़े हुए ऊंच नीच की मान्यता को ख़त्म किया जाये। हर जायज़ पेशे को सम्मान की नज़र से देखा जाये।

● एक दिन भी बेरोज़गार रह जाने को ख़तरनाक क़रार दिया जाये।

● समाज में इन नमूनों की सराहना की जाये जो मेहनत और जिद्दो-जेहद के ज़रिये ग़रीबी से बाहर निकलने में कामयाब हुए। केवल मालदार लोगों को आइडियल बनाने के बजाय, मेहनत और ईमानदारी से दौलत कमाने वालों और अपनी और समाज की हालत



बदलने वालों को आइडियल बनाया जाये।

● मालदार बनने की ख़ाहिश और मालदारी की होड़ में अंतर है। पहली ख़ाहिश सकारात्मक है जब कि दूसरी नकारात्मक है। पहली ख़ाहिश निर्माण के लिए ज़रूरी है और दूसरी ख़ाहिश के नतीजे में बिगाड़ होता है।

● बिना मेहनत के रातों रात मालदार बनने और आसान रास्तों से दौलतमंद बनने के रुझानों को रोका जाये। ऐसे रुझान लोगों को अपनी पूँजी ग़लत जगह डुबो देने पर उक्साते हैं। ऐसे शौक़ रखने वाले लोग ही धोखेबाज़ों के शिकार बनते हैं।

● जब ग़रीबी से लोग परेशान होते हैं तो उनको धोखा देने वाले लोग सक्रिय हो जाते हैं। ये लोग बहुत कम पैसे लेकर दौलतमंद बना देने का झांसा देते हैं। और ग़रीब की रही सही पूँजी भी उचक ले जाते हैं। इसलिए ऐसे मक्कारों से होशियार करना भी समाज की ख़िदमत है।

● ग़रीब आदमी अपनी कुछ जायदाद बेचने पर मजबूर होता है। यह आम बात है कि मजबूरी की हालत में क़ीमत कम हो जाती है। इस ख़ुदगर्ज़ी के मिज़ाज के मुक़ाबले में भलाई और का मिज़ाज आम किया जाये। इस बात को रिवाज दिया जाये कि समाज का कोई ग़रीब जब अपनी जायदाद मजबूरी में बेचे तो उसे ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमत पर ख़रीदा जाये। पहली कोशिश तो यही हो कि उसे बेचना ही न पड़ें उस के बिना ही इस का काम चल जाये।

● आम तौर पर ग़रीबों को उनकी मजदूरी देते हुए या उनसे सामान ख़रीदते हुए आदमी ज़्यादा मोल-भाव करता है और सख्ती से पेश आता है, जब कि बड़े शोरूम और शॉपिंग सेंटर में जाकर बिना मोल-भाव के बहुत महंगी क़ीमतें अदा करता है ।

हालांकि मामला इसके विपरीत होना चाहिए, ग़रीबों और कम पूंजी वालों के साथ ज़्यादा से ज़्यादा रियायत की जाए ताकि उनकी मदद हो। ■■

इस्लाम यह ज़रुरी क़रार देता है कि आदमी मिस्कीन को खाना ख़ुद खिलाए, दूसरों को इस पर उकसाए और ऐसा समाज तैयार हो जिसमें सब एक दूसरे को इस पर उकसाएं। ज़ाहिर है जहां ये हालत पैदा हो जाएगी वहां ग़रीबी के बाक़ी रह जाने का कोई सवाल नहीं।

Aman Builder & Developer



Aman Builder & Developer in Vasco Da Gama, Goa

Having solid experience in the real estate market, Aman Builder & Developer in Vasco Da Gama presents a wide choice of residential, industrial, commercial, recreational and institutional properties to its clients. Distinguished for their award-winning projects, this real estate group is truly one of the most established and recognized ones in the housing and construction sector. Creating unique and innovative spaces ever since established, the company has been able to build a strong foundation over the passage of time. The builder has constantly strived to exceed the expectations of its clients through quality work, transparent work ethics and use of cutting-edge technology. The organization is committed to provide an enhanced living experience to the residents through constant innovation and creative delivery of projects. The office is situated on , Near Ktc Bus Stand,Vasco Da Gama, which is easily accessible from any part of the city.

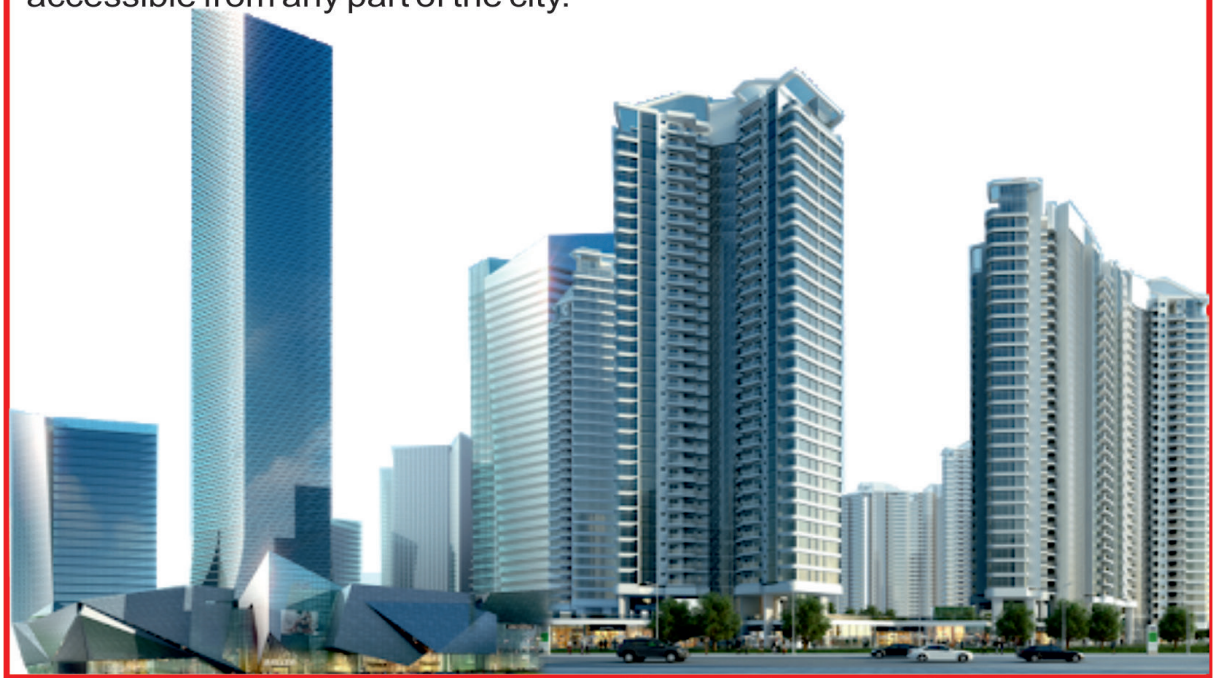

Shop No 3/4,G.F. 1st Floor, Karma Empress Building,
Vasco Da Gama, Goa - 403802

नारी विमर्श



मुसब क़ाज़ी

नारीवाद को एक नई भाषा की आवश्यकता

भारत के लिए टोक्यो ओलंपिक 2020 की शुरुआत मीराबाई चानू के भारोत्तोलन में रजत पदक जीतने के साथ हुई। मीराबाई के साथ-साथ पदकों के अकाल से जूझते भारतवर्ष को भी बधाई!

मीराबाई की इस उपलब्धि ने मुझे कर्णम मल्लेश्वरी की याद दिलाई, जो सिडनी गेम्स 2000 में इसी खेल में कांस्य पदक जीतकर, प्रथम भारतीय महिला ओलंपिक पदक विजेता बनीं थीं। उनकी इस ऐतिहासिक जीत ने ही ओलंपिक खेलों की ओर मेरी रुचि जगाई।

इसीलिए, मैं इस अवसर का लाभ उठाते हुए खेलों में महिलाओं की स्थिति पर चर्चा करने का प्रयास करना चाहूंगा, लेकिन यदि आप ऐसा सोच रहे हैं कि मैं आमतौर पर चर्चित और अपेक्षित विषय 'महिलाओं में प्रतिभा है पर उनके लिए अवसरों की कमी है' पर





चर्चा करने जा रहा हूं, तो ऐसा नहीं है।

बल्कि मुख्यधारा से इतर खिलाड़ियों की वेशभूषा से जुड़े एक नए पहलू पर बात करना चाहता हूं, क्योंकि मेरे विचार से यह वर्तमान में लैंगिक समानता पर चल रहे विमर्श के संकटों में सबसे अधिक प्रासंगिक और प्रमुख है।

25 जुलाई को जर्मनी की महिला जिम्नास्टों ने महिला खिलाड़ियों के 'सेक्सुअलाइज़ेशन' के ख़िलाफ़ अपना विरोध दर्ज कराने के लिए, दशकों से प्रचलित परंपरागत बिकिनी-लियोटार्ड की जगह शरीर को ढकने वाले यूनिटार्ड पहने क्योंकि महिलाओं की अपेक्षाकृत पुरुष समकक्षों को शरीर को अधिक ढकने वाली पोशाक (ढीले शॉर्ट या लंबी पैंट) पहनने की अनुमति मिलती है।

अगर आपको लगता है कि ये कोई 'बड़ी बात' नहीं है, तो मुझे आपको ये याद दिलाने की ज़रूरत है कि महिलाओं का सेक्सुअलाइज़ेशन सिर्फ़ खेल के मैदान तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि इसका प्रभाव उनके वास्तविक जीवन पर भी पड़ता है।

2018 में पूर्व यूएस राष्ट्रीय टीम डॉक्टर, लैरी नस्सार, को कई मशहूर महिला खिलाड़ियों समेत, सैंकड़ों जिमनास्टों के यौन-शोषण के आरोप में 176 साल कारावास का दंड दिया गया था।

उसकी अभियुक्ति के दौरान, खिलाड़ियों ने यह तर्क रखा कि खेल संस्कृति ने महिलाओं के वस्तुकरण और उनके प्रति दुर्व्यवहार को स्वीकृति दी है। इससे पहले, जुलाई में ही नॉर्वे की महिला बीच-हैंडबॉल टीम पर अंतर्राष्ट्रीय हैंडबॉल संघ (आईएचएफ़) द्वारा निर्धारित यूनिफ़ॉर्म बिकिनी बॉटम की जगह शॉर्ट्स पहनकर खेलने पर जुर्माना लगाया गया था।

इन महिलाओं ने यूनिफ़ॉर्म तय करने में प्रयुक्त दोहरे मापदंडों को प्रकाश में लाने के लिए जान-बूझकर नियम तोड़े। एक तरफ़ जहां आईएचएफ़ महिलाओं को ऐसे बिकिनी बॉटम पहनने के लिए बाध्य करता है जिनके किनारे 4 इंच से अधिक नहीं होने चाहिए, वहीं दूसरी ओर, पुरुषों को अपने घुटनों से 4 इंच ऊपर तक शॉर्ट्स पहनने की आज़ादी देता है!

नारीवाद की पहली लहर प्राथमिक रूप से महिलाओं को कार्यक्षेत्र व अन्य सभी स्थलों पर समान दर्जा व अधिकार दिलाने की ओर प्रयासरत थी, दूसरी लहर के नारीवाद ने पितृसत्ता की ज़ंजीरों को तोड़ने वाली भाषा ग्रहण की और व्यक्तिगत अभिरुचि पर बल दिया, जिसके फलस्वरूप यौनिक मुक्ति के एजेंडे को आधार मिला।

पॉपस्टार पिंक ने नॉर्वे की महिला बीच-हैंडबॉल टीम की खिलाड़ियों पर लगे जुर्माने की राशि भरने का प्रस्ताव यह कहते हुए दिया है कि वे टीम पर गर्व करती हैं कि उन्होंने अपनी यूनिफ़ॉर्म से जुड़े 'बेहद सेक्सिस्ट (महिला विरोधी) नियमों' का विरोध किया है।

केवल बीच-हैंडबॉल ही इकलौता ऐसा खेल नहीं है जिसमें लिंगभेदी पोशाक के नियम हैं। ट्रैक और फ़ील्ड, बीच-वॉलीबॉल, बैडमिंटन और टेनिस जैसे कई खेलों में भी महिला खिलाड़ियों के लिए ऐसी पोशाक निर्धारित की जाती है, जिसमें शरीर का अधिकतर भाग खुला रहे।

कुछ वर्ष पहले इसी प्रकार की पहल करते हुए, फ्रेंच-अल्जीरियन व्यावसायी और कार्यकर्ता, रशीद नक्काज़ ने, घोषणा की थी कि वे उन अर्थदंडों को भरेंगे, जो डेनमार्क में 'बुर्के पर प्रतिबंध' लगाने वाले क़ानून की अवहेलना किए जाने के कारण लगाए गए थे; जिसके अंतर्गत चेहरा ढकने वाले कपड़ों को असंवैधानिक क़रार दिया गया था।

इस असमानता का क्या औचित्य है?

इस प्रकार के अनुचित व असमान व्यवहार के पीछे क्या कारण हैं? जब आईएचएफ़ की वक्ता से यह प्रश्न किया गया, तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे ऐसे नियमों के पीछे के कारण को नहीं जानतीं।

हालांकि, इस भेदभाव का वास्तविक उद्देश्य तब सामने आया था जब 2011 में विश्व बैडमिंटन संघ ने आदेश दिया कि महिलाओं को अभिजात्य स्तर पर खेलने के लिए स्कर्ट या ड्रेस अनिवार्य रूप से पहनने चाहिए।

दिए गए तर्क – अधिक 'प्रलोभक प्रस्तुति' देने के लिए और महिला खिलाड़ियों को 'स्त्री-सदृश' दिखाने तथा कॉर्पोरेट आयोजकों व प्रशंसकों हेतु 'चित्ताकर्षक' बनाने के लिए।

हम यहां तक कैसे पहुंचे?

यहां उद्गम का संक्षिप्त विवरण है–18वीं शताब्दी के अंतिम और 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पन्न श्रम-रिक्तियों को भरने के लिए बड़ी तादाद में स्त्रियों ने भी

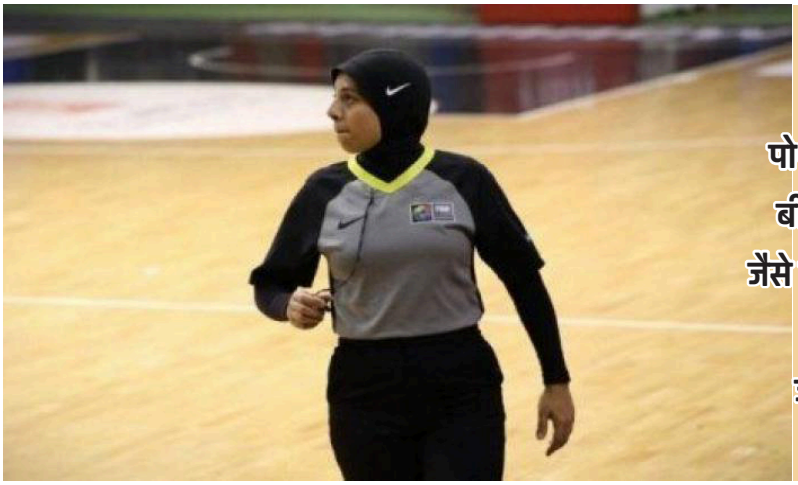

केवल बीच-हैंडबॉल ही इकलौता ऐसा खेल नहीं है जिसमें लिंगभेदी पोशाक के नियम हैं। ट्रैक और फ़ील्ड, बीच-वॉलीबॉल, बैडमिंटन और टेनिस जैसे कई खेलों में भी महिला खिलाड़ियों के लिए ऐसी पोशाक निर्धारित की जाती है, जिसमें शरीर का अधिकतर भाग खुला रहे।

कार्यक्षेत्र में क़दम रखा। जल्द ही, पुरुषों ने, जो कार्यक्षेत्र को नियंत्रित करते थे, बाज़ार में महिलाओं की कार्यक्षमता से अलग एक भिन्न मानदंड ईजाद किया– सेक्स अपील। हालांकि महिलाओं के स्त्रीत्व और यौनिकता को पुरुषों की यौनलिप्सा और धन के लिए दोहित करना, उनकी प्राकृतिक अंतर्बाधाओं को ढहाए बिना संभव नहीं था।

इस प्रकार महिलाओं द्वारा स्वयं को सामाजिक व लैंगिक मानदंडों से 'मुक्त' करने के लिए प्रोत्साहित करने की क़वायद शुरू हुई। यौन-विद्रोह की क्रियाओं के माध्यम से नवीन मूल्य स्थापित किए गए जिनमें अश्लील पहनावे को बढ़ावा देना भी शामिल था।

इन प्रयत्नों ने नारीवादी आंदोलन के साथ तारतम्यता बिठाने में सफलता प्राप्त कर ली। जबकि नारीवाद की पहली लहर प्राथमिक रूप से महिलाओं को कार्यक्षेत्र व अन्य सभी स्थलों पर समान दर्जा व अधिकार दिलाने की ओर प्रयासरत थी, दूसरी लहर के नारीवाद ने पितृसत्ता की ज़ंजीरों को तोड़ने वाली भाषा ग्रहण की और व्यक्तिगत अभिरुचि पर बल दिया, जिसके फलस्वरूप यौनिक मुक्ति के एजेंडे को आधार मिला।

विडंबना पर विचार करें–जो महिलाएं समान वेतन और मताधिकार की मांग कर समाज में अपनी गरिमा के लिए संघर्षरत थीं, वहीं सौंदर्य-प्रतियोगिताओं, विज्ञापनों और सिनेमा में अपनी मर्यादा खो रही थीं – जहां पुरुषों ने शर्तें निर्धारित करना जारी रखा था और महिलाओं को चुनाव की आज़ादी नहीं थी और यह सब महिला सशक्तिकरण के नाम पर किया जाता रहा है। महिला खेलों की भी यही वास्तविकता है। नारीवादी आंदोलन महिलाओं को दर्शनीय-खेलों में लाने में सफल तो हुआ परंतु विडंबना यह रही कि यह खेल-भावना से अधिक उनकी यौनिकता के विषय में था।

'एस्थेटिक्स' से अधिक 'एथलेटिसिज़्म'

मशहूर महिला खिलाड़ियों में से कुछ के नाम गूगल करें, आपको खोज के परिणामों में से अधिकतर ऐसे परिणाम मिलेंगे, जिनका खेलों से कोई संबंध नहीं होगा और केवल पुरुषों की यौन कुंठा हेतु सेवार्थ हैं।

महिला खिलाड़ियों का यह रूप प्रायोजकों और आयोजकों के लिए इस क्षेत्र में कुशल होने का प्रमाण है। और चूंकि पुरुषों द्वारा पहले से प्रयुक्त पोशाक महिलाओं का पूर्ण वस्तुकरण करने की राह में व्यवधान उत्पन्न कर रही थी, इसलिए मौसम के प्रतिकूल होने और खेल से भी कोई संबंध न होने के उपरांत भी उसे अपेक्षाकृत छोटी पोशाकों से बदल दिया।

महिलाओं के इस नग्न-शोषण के ख़िलाफ़ ज़्यादा आवाज़ें क्यों नहीं उठ रहीं?

नारीवाद के समर्थकों के सामने, महिलाओं के वस्तुकरण और शोषण के लिए अपने आदर्शों का अतिक्रमण न होने देना एक चुनौती है। इसके लिए सभी प्रकार के भेदभाव की कड़ी भर्त्सना करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए उन्हें यह भी समझने की ज़रूरत है कि इन मुद्दों से दूरी बनाने के कारण, वे चाहे-अनचाहे महिलाओं के पतन और उनके निम्नीकरण में सहयोगी हैं। और इसके लिए सबसे पहले, अधिकारों और व्यक्तिगत-अभिरुचि की भाषा से इतर एक नवीन विमर्श की आवश्यकता है।

■■

(मुसब क़ाज़ी छात्र संगठन स्टूडेंट्स इस्लामिक आर्गेनाइजेशन ऑफ़ इण्डिया (SIO) के राष्ट्रीय सचिव हैं, उनका मूल लेख अंग्रेज़ी में है जिसका हिन्दी अनुवाद कुलसूम शमीम ने किया है)

विश्व पटल



मसऊद अब्दाली

मिस्र से लोकतंत्र को उखाड़ फेंकने वाली ताक़तें ट्यूनीशिया में भी सक्रिय

ट्यूनीशियाई राष्ट्रपति क़ैस सईद ने संसद को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया और प्रधान मंत्री हिशाम अल-मशीशी को निष्कासित कर दिया। कोरोना के कारण लगाए गए प्रतिबंधों और उसके परिणामस्वरूप बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी के खिलाफ कई हफ्तों से विरोध प्रदर्शन हो रहे थे। राष्ट्रपति भवन से जारी एक बयान में कहा गया है कि लोग सरकार के पाखंडी व्यवहार और भ्रष्टाचार से असंतुष्ट हैं, अतः देश की सुरक्षा के लिए अक्षम सरकार को हटाना जरूरी था।



सवा करोड़ से भी कम आबादी वाला यह छोटा सा देश भूमध्य सागर के तट पर उत्तरी अफ्रीका में स्थित है। शैक्षणिक स्तर पर, ट्यूनीशिया अपनी मस्जिद और जामिया अज़्ज़ैतूना के लिए प्रसिद्ध है। दूसरी सदी हिजरी में स्थापित, यह शैक्षणिक संस्थान दुनिया के सबसे पुराने मदरसों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के पिता बराक हुसैन ओबामा सीनियर ने भी जामिया अज़्ज़ैतूना से अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी।

जनवरी 1956 में फ्रांस से स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले ट्यूनीशिया ने अपने पहले 55 वर्षों में केवल दो राष्ट्रपति देखे। पहले राष्ट्रपति हबीब बोरक़िया 30 वर्षों तक सत्ता पर काबिज़ रहे, फिर 1987 में प्रधानमंत्री जैनुल आबिदीन राष्ट्रपति

बन गए और 23 वर्षों तक निरंकुशता का पूरा आनंद लेने के बाद, 14 जनवरी, 2011 को सऊदी अरब भागने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद होने वाली पहले आम चुनाव में 90 फीसदी मतदान हुआ। अन्नहदा ने 41 फीसदी वोट हासिल किए और सदन की 217 में से 90 सीटों पर जीत हासिल की। उसकी निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस फार रिपब्लिक ने 30, डेमोक्रेटिक फोरम ने 21 चरमपंथी ध्प्रोग्रेसिव डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने केवल 17 सीटों पर जीत हासिल की।

अन्नहदा द्वारा तैयार किए गए संविधान के बारे में एमनेस्टी इंटरनेशनल का कहना है कि यह एक वास्तव में मानवाधिकार चार्टर है जिसमें कैदियों के अधिकारों की भी गारंटी दी गई है। हर प्रकार की हिंसा की जांच के लिए पुलिस हस्तक्षेप के योग्य ठहरायी गई है। देश भर में जिला आधार पर मानवाधिकार समितियों का गठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षता सेवारत न्यायाधीशों द्वारा की जाती है। ये समितियां हिंसा के हर आरोप की जांच करती हैं और सार्वजनिक जगहों पर मीडिया के सामने सुनवाई होती है। ये समितियां आरोप साबित होने पर दोषियों की सज़ा भी तय करती हैं। संविधान के अनुसार रंग, नस्ल, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव करना अपराध है। अभिव्यक्ति की आज़ादी को संवैधानिक संरक्षण प्राप्त है और अदालतें प्रशासन के प्रभाव से पूरी तरह आज़ाद हैं।

जैसे ही संविधान पारित हुआ, जनवरी 2013 में नए संविधान के अनुसार एक राष्ट्रीय सरकार का गठन किया गया, जिसकी देखरेख में 217 सदस्यों वाली प्रतिनिधि सभा के लिए 26 अक्टूबर को फिर से चुनाव हुए। सेना समर्थक निदा-ए त्यूनिस 86 सीटों के साथ शीर्ष पर रही,



अन्नहदा ने 69 सीटों के साथ विपक्ष की भूमिका संभाल ली। पांच साल बाद, 2019 में फिर से चुनाव हुए, जिसमें किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला, लेकिन 52 सीटों के साथ, अन्नहदा संसद में सबसे बड़ी पार्टी बन गई। कुछ दिनों बाद, राष्ट्रपति चुनाव के पहले दौर में, किसी भी उम्मीदवार को 50 वोट नहीं मिल सके। इसलिए वोटों के मामले में पहले स्थान पर रहने वाले क़ैस सईद और उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी नबील क़रावी के बीच एक रन-ऑफ मुक़ाबला हुआ। अन्नहदा ने क़ैस सईद का समर्थन किया और उन्हें भारी बहुमत से राष्ट्रपति चुना गया। दूसरी ओर, राशिद अल ग़न्नूशी संसद के अध्यक्ष चुने गए। यानी अरब स्प्रिंग की कामयाबी के बाद से ट्यूनीशिया में तीन संसदीय और दो राष्ट्रपति चुनाव हो चुके हैं। ये सभी चुनाव बेहद शांतिपूर्ण तरीके से हुए और सत्ता हस्तांतरण में कोई अव्यवस्था नहीं देखी गई। वैचारिक मतभेदों के बावजूद, ट्यूनीशिया में एक दशक से अधिक समय से प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति, स्पीकर और विपक्ष के बीच संबंध बहुत अच्छे रहे हैं।

पिछले साल मार्च में आए कोरोना ने देश की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया है और महंगाई ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया। नतीजतन, ट्यूनीशियाई राजनेताओं द्वारा साथ मिलकर काम करने की कोशिशों पर पानी फिर गया और आरोप प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू हो गया। राष्ट्रपति क़ैस ने शिकायत की कि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए उनके सुझावों की पुष्टि में संसद बहुत देर लगाती है। दूसरी ओर, अध्यक्ष राशिद अल-गन्नूशी ने कहा कि संसद में चर्चा के बिना कानून नहीं बनाया जा सकता है, लेकिन वे तत्काल कार्रवाई के लिए राष्ट्रपति के अध्यादेश पर आपत्ति नहीं करेंगे।

दो हफ्ते पहले सरकार के खिलाफ विरोध शुरू हुआ और जल्द ही उसका रुख़ संसद और विशेष रूप से अन्नहदा की ओर हो गया। संसद को घेर लिया गया और सरकार से इस्तीफा की मांग की जाने लगी। हिंसा में दर्जनों लोग घायल हो गए, नकाबपोश समूहों ने कई जगहों पर अन्नहदा के कार्यालयों पर हमला किया और दक्षिण-पश्चिमी ट्यूनीशियाई शहर टूसेंट में एक स्थानीय कार्यालय में आग लगा दी। मार्शल लॉ

(शेष पृष्ठ 39 पर)



दर्शन

मुत्तलिब मिर्ज़ा
कोटा, राजस्थान

मानसिक अवसाद: मज़हबी फ़िक्र एक बड़ा सहारा

इंसान की ज़िंदगी में कभी ऐसा वक़्त भी आ जाता है जब वो घबराहट और मायूसी का शिकार हो जाता है, ये घबराहट और मायूसी कभी भविष्य की चिंता को लेकर होती है, तो कभी माज़ी के हादसात इसका कारण बन जाते हैं, इन परेशानियों के नतीजे में इंसान कभी-कभी बेबसी और निराशा की चादर अपने ऊपर डाल लेता है, यह स्थिति मनोविज्ञान में डिप्रेशन या मानसिक अवसाद कहलाती है, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन (WHO) की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर पांचवां व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार है। यानी भारत की लगभग 20% आबादी मानसिक अवसाद का शिकार है, ये स्थिति हाल ही में और बुरी हो गई जब पूरी दुनिया के साथ भारत भी कोरोना महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ, लाखों लोग मौत का निवाला बने, करोड़ों लोग बेरोज़गार हो गए, लोग पलायन पर मजबूर हुए, भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का कहना है कि कोरोना महामारी के दौरान इस बीमारी से पीड़ित 30 फ़ीसद लोग अवसाद या डिप्रेशन का शिकार हुए हैं।

मानसिक अवसाद की स्थिति में इंसान ख़ुद को तन्हा महसूस करता है, दिल बेचैनी और घबराहट से बैठा जाता है, अंदेशों और असुरक्षा के भाव उसे चिंतित रखते हैं, मानसिक अवसाद की स्थिति में इस बात की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं कि इंसान ख़ुद अपने हाथ से अपनी जान ले ले, एक रिपोर्ट के

अनुसार आत्महत्या करने वाले लोगों में पचास प्रतिशत से ज़्यादा संख्या मानसिक अवसाद से ग्रस्त लोगों की होती है, मानसिक अवसाद की समस्या की गंभीरता का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जापान ने लोगों को मानसिक अवसाद व इसकी वजह से होने वाली आत्महत्याओं से बचाने के लिए हाल ही में "Loneliness Ministry" के नाम से नया मंत्रालय शुरू किया है जिसका काम अकेलेपन से लड़ने में लोगों की मदद करना और आत्महत्या की घटनाओं पर लगाम लगाना है।

डिप्रेशन चूंकि एक मानसिक स्थिति का नाम है इसलिए इंसान के मन में पनपने वाले विचारों से भी इस स्थिति का बहुत गहरा सम्बंध है, इसलिए इंसान को ऐसे विचारों से अवगत कराना चाहिए जो इंसान के मन व मस्तिष्क में ऊर्जा का संचार करे, उसके अंदर आत्मविश्वास पैदा करे, डिप्रेशन से निकलने के लिए इंसान को सहारों की आवश्यकता भी पड़ती है, ये सहारे उसे उसके रिश्तेदारों की तरफ़ से मिलते हैं, बीवी बच्चों व अन्य घर वालों का साथ इंसान में मानसिक अवसाद की स्थिति को बहुत गंभीर होने से बचाता है।

मज़हब का सहारा भी इंसान को इस तरह की मानसिक स्थिति में गिरने से बचाता है, मज़हब इंसान में एक तो ये विश्वास पैदा करता है कि सब सहारों से बढ़कर भी एक और सहारा है जो इंसानी सहारों की तरह कमज़ोर और बेबस नहीं है, अर्थात् उसके पैदा करने वाले ईश्वर का सहारा, ईश्वर के होने का विश्वास इंसान की ज़िंदगी पर बहुत गहरा असर डालता है, एक इंसान जब मानसिक तनाव की स्थिति में हो, भविष्य के अंदेशे उसे घेरे हुए हों और वो निराशा की खाई में गिरने वाला हो, तभी ख़ुदा की ये पुकार उसके कानों में पड़ जाए "ऐ मेरे बंदो ! मेरी रहमत से मायूस न हो जाओ" तो इस पुकार को सुनकर बेदम जिस्म में जान आ जाती है, बंजर हो चुके दिल में बहार आ जाती है, कपकपाते क़दमों को मज़बूत सहारा मिल जाता है और मायूसी के बादल छट जाते हैं, इंसान को एहसास होता है कि अगर कोई उसकी बात नहीं सुनता तो वो ईश्वर को सुना सकता है, कोई उसके मन की स्थिति को नहीं समझता तो उसके मन की स्थिति को समझने और जानने वाला ईश्वर है, इंसान मुसीबतों और परेशानियों से घबरा कर ही मानसिक अवसाद की स्थिति में आता है, लेकिन अगर इंसान को मालूम हो कि परेशानियां ईश्वर की तरफ़ से परीक्षा है और वही इन परेशानियों से निजात दिला सकता है, तो इंसान अवसाद से ग्रस्त होने के बजाए ईश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को अधिक मज़बूत करने की कोशिश करेगा।

मज़हब का सहारा भी इंसान को इस तरह की मानसिक स्थिति में गिरने से बचाता हैं, मज़हब इंसान में एक तो ये विश्वास पैदा करता हैं कि सब सहारों से बढ़कर भी एक और सहारा हैं जो इंसानी सहारों की तरह कमज़ोर और बेबस नहीं हैं, अर्थात् उसके पैदा करने वाले ईश्वर का सहारा, ईश्वर के होने का विश्वास इंसान की ज़िंदगी पर बहुत गहरा असर डालता हैं।

हाल ही में राजस्थान के एक क़स्बे सांगोद में बाढ़ की वजह से बहुत तबाही हुई, करोड़ों का नुक़सान हुआ, वहां के लोगों से जब एक धार्मिक व सामाजिक संगठन के लोगों ने मुलाक़ात की, उनके नुक़सान पर उन्हें दिलासा दिया, धैर्य बंधाया, उनकी बातें सुनी, उन्होंने नम आंखों से अपना दर्द बताया, लेकिन साथ ही इस बात से ख़ुद को तसल्ली भी दे रहे थे कि "सब ख़ुदा की मर्ज़ी है", ईश्वर पर विश्वास इंसान को इस सतह पर ले आता है कि इंसान बड़े से बड़े नुक़सान पर ख़ुद ही ख़ुद को संभालता है, तसल्ली देता है और मायूस होकर बैठने व अंदेशों से घिरने के बजाए भविष्य निर्माण के नए रास्तों पर चल पड़ता है। मज़हब इंसान को ये भी बताता है कि इंसान की ज़िंदगी बस उसके पैदा होने से लेकर उसकी मौत तक नहीं है, बल्कि ये उसकी ज़िन्दगी का सिर्फ़ एक पड़ाव है, इस पड़ाव में अगर कुछ तकलीफ़ें और हादसों से उसका सामना हुआ भी है तो उसे घबरा कर रुकने के बजाए या ख़ुद पर अत्याचार करने के बजाए अगले पड़ाव की ख़ुशहाली की कोशिशों में लगे रहना चाहिए, मज़हब इंसान को एक ऐसी ज़िन्दगी का तसव्वुर देता है, जो ख़त्म होने वाली नहीं है।

हमारे आसपास अगर ऐसा कोई शख़्स मौजूद हो जिसमें मानसिक अवसाद के लक्षण दिखाई दें तो हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि उसकी मानसिक स्थिति को समझते हुए उसे दिलासा व तसल्ली दें, उसकी घबराहट व मायूसी ख़त्म करने की कोशिश करें, उसे ऐसे कामों में व्यस्त रखने की कोशिश करें जो उसे पसंद हों, उसमें ये उम्मीद जगाने की कोशिश करें कि कितनी ही असफलताओं के बावजूद सफलता की उम्मीद बाक़ी है। ■■

जो रोज़ी हमने तुम्हें दी है,
उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि तुम में से किसी की
मौत का समय आ जाए और उस समय वह कहे कि ऐ मेरे रब
क्यों न तूने मुझे थोड़ी-सी मुहलत (छूट) और दे दी ताकि मैं सदक़ा
(दान) देता और नेक लोगों में शामिल हो जाता, हालांकि जब
किसी की मुहलत पूरी होने का समय आ जाता है तो उसे और
ज़्यादा मुहलत नहीं मिलती, और जो कुछ तुम
करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।

(क़ुरआन, 63 :10-11)

A well Wisher

Al-Flah Educational & Welfare Trust KOLKATA

कविता

ओसामा हमीद

ताबूत

मैं उस दुकान की तलाश में हूं
जहां ताबूत बनते हैं
मुझे उस माहिर कारीगर से मिलना है
जो सबसे अच्छे ताबूत बनाने के लिए मशहूर है

मुझे उससे पूछना है
उसकी कारीगरी का राज़
मुझे पूछना है कि
ताबूत बनाते वक़्त वह क्या सोचता है,
क्या वह उन लोगों को याद करता है
जो उसके बनाए हुए ताबूतों में दफ़न हैं,
या उन लोगों की कल्पना करता है
जो उसके बनाए हुए मज़बूत ताबूतों में
दफ़न होने वाले हैं

मुझे जानना है कि वह
चलते-फिरते लोगों को
अपने ताबूत में लेटा हुआ सोचकर भी
कैसे जी लेता है उसके साथ

ताबूत का माहिर कारीगर
हर नाप का ताबूत बना लेता है
मुझे उससे पूछना है
कि क्या उसने ये नापें
ज़िंदा लोगों को देखकर बनाई हैं?

मुझे उनसे यह भी पूछना है कि
ताबूतों के अक्सर ख़रीदार
मोल-भाव क्यों नहीं करते,
मुझे पूछना है कि उसके पास
कब-कब आती हैं एडवांस बुकिंग
और कौन लोग हैं जो
थोक में ले जाते हैं ये ताबूत

मुझे शक है कि ताबूतों का मशहूर कारीगर
मेरी बातों का जवाब दे पाएगा

और अगर उसने अपने राज़ खोले
तो मैं उससे ज़रूर पूछूंगा
कि मुझे देखते ही
क्या उसने नहीं सोचा कि एक दिन मैं भी
उसके बनाए ताबूत में सो रहा हूंगा?
और उसने अपने लिए बनाए हुए ताबूत को
कहां छिपा रखा है?



"हिदायत
और खुशख़बरी उन ईमान
लाने वालों के लिए, जो नमाज़ क़ायम
करते और ज़कात देते हैं, और फिर वे ऐसे
लोग हैं जो आख़िरत पर पूरा यक़ीन
रखते हैं।"
(क़ुरआन, 27: 2-3)



A well Wisher
Azaan
International
School
HYDRABAD

पुस्तक-समीक्षा

शबीउज़्ज़मां
पुणे

हिंदुत्व की सार्वजनिक स्वीकृति के लिए संघ के प्रयास

बद्री नारायण की नई किताब 'रिपब्लिक ऑफ़ हिन्दुत्वा' पर एक नज़र

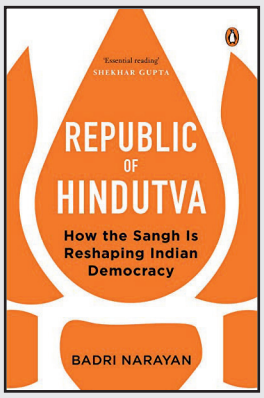

यह पुस्तक जहां संघ के विस्तार और उसके बदलते परिदृश्य को खूबसूरती से प्रस्तुत करती है, वहीं इसके कुछ निष्कर्ष और विश्लेषण ऐसे हैं, जिन से सहमत नहीं हुआ जा सकता और लेखक ने भी उनके लिए कोई मजबूत तर्क नहीं दिया है। बद्री नारायण ने लिखा है कि संघ अब हिंसा में विश्वास नहीं रखता है, बल्कि समाज में हो रही हिंसा से खुद परेशान है। लेकिन पिछले सात वर्षों की घटनाएं, परिस्थितियां और आंकड़े इस कथन की पुष्टि नहीं करते हैं बल्कि मुसलमानों के खिलाफ हिंसा इसी दौरान आम हुई।

प्रोफ़ेसर बद्री नारायण की नई किताब "रिपब्लिक ऑफ हिंदुत्व" को अकादमिक हलक़ों में बहुत गंभीरता से लिया जा रहा है। किताब दो बुनियादी बातों पर ज़ोर देती है। पहली यह कि संघ भारतीय समाज में उभरने वाला आंदोलन है, इसलिए इसे बाहरी दृष्टिकोण, विशेष रूप से वामपंथ के दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। दूसरा यह कि संघ को समझने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधियां अब अप्रचलित हो चुकी हैं। संघ के विरोधी इसकी परछाई से लड़ रहे हैं, क्योंकि संघ समय के साथ बदल चुका है, इसे जानने के लिए नई समझ की ज़रूरत है। यह पुस्तक संघ को एक नई समझ से समझने का प्रयास है। संघ को समझने के दो तरीक़े हैं। एक यह कि

इसे इसके साहित्य के माध्यम से समझा जाए, दूसरा तरीक़ा यह ज़मीन पर इसकी गतिविधियों और इससे जुड़े लोगों को देखा जाए। प्रोफ़ेसर बद्री नारायण ने ज़मीनी स्तर पर संघ कार्यकर्ताओं से मुलाक़ात की। उन्होंने लगभग 35 शाखाओं का सर्वेक्षण किया है जिसके परिणामस्वरूप यह पुस्तक अस्तित्व में आई है।

बद्री नारायण के अनुसार, नया आरएसएस एक पूरी तरह से अलग संगठन है, जो सक्रिय रूप से मीडिया और सोशल मीडिया का उपयोग करता है और भारत में सबसे बड़ा एनजीओ बनकर लोगों की सेवा करता है। जिसने न केवल संगठन की कार्यप्रणाली को बदला है, बल्कि नए समाज में उभरे सवालों और बदलावों को भी अपने भीतर जगह दी है। आधुनिकता और लोकतंत्र द्वारा बनाए गए नए विचारों और तर्कों को संघ ने अपनी नीति में समाहित किया है। उदाहरण के लिए, महिलाओं के अधिकार, महिला पुरुष समानता और समलैंगिकता जैसे सामाजिक मुद्दे। पहले, संघ को एक पुरुष संगठन माना जाता था और महिलाओं की भूमिका नगण्य थी, लेकिन अब संघ की महिला शाखा, 'राष्ट्रीय सेविका संघ' काफ़ी विकसित हो गई है और इसे नेतृत्व में स्थान दिया जा रहा है।

संघ समाज के हर वर्ग विशेषकर दलितों और आदिवासियों के बीच अपने विस्तार के लिए निरंतर प्रयासरत है। जिसे अमित शाह ने समग्र हिंदुत्व का नाम दिया है। जिसके लिए संघ सामाजिक समरसता के नाम से एक आंदोलन चला रहा है। दलितों को क़रीब लाने के लिए संघ उनकी सभी शिकायतों को दूर करने का प्रयास कर रहा है। जैसे बाबा साहब अम्बेडकर को भी संघ अपना रहा है और उन्हें राष्ट्रीय नायकों की श्रेणी में स्थान दिया जा रहा है। दलितों की सबसे बड़ी इच्छा धार्मिक पहचान प्राप्त करने की रही है। वे चाहते हैं कि उनके मंदिर हों जहां वे अपने मालिक के साथ संबंध मज़बूत कर सकें और जहां धार्मिक और सामाजिक रीतियों को पूरा किया जा सकता है। संघ दलितों की इस आवश्यकता को पूरा कर रहा है। वह प्रत्येक जाति के लिए उसकी आस्था के अनुसार मंदिर बनवा रहा है। संघ हिंदुओं की विभिन्न जातियों और समुदायों को एक-दूसरे के क़रीब लाने की भी कोशिश कर रहा है। 2019 में आयोजित कुंभ मेला इसका एक स्पष्ट उदाहरण था, जिसमें पूरे भारत से हर जाति और समुदाय के लोगों को आमंत्रित किया गया था। यह मेला समग्र हिंदुत्व का प्रतीक था। इसी तरह संघ कभी आरक्षण का कट्टर विरोधी था, लेकिन आरक्षण की नीति भी बदल रही है।

संघ को भारतीय समाज की गहरी समझ है। वह जानता है कि पश्चिमी देशों की तरह यहां केवल तर्क काम नहीं करते हैं, बल्कि धर्म, समाज और संस्कृति भी अधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिए संघ हिंदू धर्म के लोकप्रिय प्रचारकों या कथाकारों को भी अपना रहा है। जैसे प्रसिद्ध राम कथा वाचक मुरारी बापू, जगत गुरु राम स्वरूप आचार्य महाराज, प्रेम भूषण जी महाराज, अनुराधा सरस्वती जी, देवकी नंदजी, प्रियंका और पंडित राम जी शर्मा और अन्य। ये सभी कहीं न कहीं हिंदुत्ववादी विचार से जुड़े हैं और अपने भाषणों के दौरान राम मंदिर, अनुच्छेद 370, ट्रिपल तलाक़ और हिंदुत्व की राजनीति से जुड़े विषयों पर चर्चा करते हैं।

यह पुस्तक जहां संघ के विस्तार और उसके बदलते परिदृश्य को ख़ूबसूरती से प्रस्तुत करती है, वहीं इसके कुछ निष्कर्ष और विश्लेषण ऐसे हैं, जिनसे सहमत नहीं हुआ जा सकता और लेखक ने भी उनके लिए कोई मज़बूत तर्क नहीं दिया है। बद्री नारायण ने लिखा है कि संघ अब हिंसा में विश्वास नहीं रखता है, बल्कि समाज में हो रही हिंसा से ख़ुद परेशान है। लेकिन पिछले सात वर्षों की घटनाएं, परिस्थितियां और आंकड़े इस कथन की पुष्टि नहीं करते हैं, बल्कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ हिंसा इसी दौरान आम हुई। मॉब लिंचिंग जैसे जघन्य अपराधों की पुनरावृत्ति होने लगी, दिल्ली, बिहार, बंगाल, उत्तर भारत और कर्नाटक में इसी समय में दंगे हुए। कोरोना और तब्लीग़ी जमाअत की घटनाओं के बाद देश भर में मुसलमानों पर हमले हुए और उन पर सबसे बढ़कर हिंसा की भाषा आम हो गई। इन सभी घटनाओं को रोकने के लिए संघ की ओर से कोई गंभीर प्रयास नहीं दिखाई देता।

लेखक ने पूरी किताब में संघ द्वारा किए जाने वाले सेवा कार्यों का उल्लेख सकारात्मक ठंग से किया है। इससे यह आभास होता है कि संघ के भीतर मानव सेवा की भावना पैदा हो गई है, हालांकि यह दो कारणों से संभव नहीं है। पहला यह है कि सामान्य रूप से धार्मिक और वैचारिक संगठन, जब जनसेवा करना शुरू कर देते हैं, तो वास्तव में, लोगों की सेवा करना लक्ष्य नहीं है, बल्कि अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करना ही लक्ष्य होता है। दूसरा यह है कि मुसलमान और ईसाई के यहां धार्मिक तौर पर मानव-सेवा की धारणा पाई जाती है, लेकिन हिंदू संस्कृति में धार्मिक आधार पर ऐसी कोई अवधारणा नहीं मिलती है। अतः यह स्पष्ट होना चाहिए कि संघ की सेवा का आधार राजनीतिक है न कि मानव सेवा की सच्ची भावना।

तीसरी बात जिसकी व्याख्या बद्री नारायण संघ के बदलाव के रूप में कर रहे हैं, तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि संघ ने अपनी विचारधारा कभी नहीं बदली है। इसकी मूल विचारधारा यही है कि इस देश में मुसलमान और ईसाई बाहरी ताक़तें हैं और उन्हें यहां दूसरे दर्जे का नागरिक बनकर रहना है और हिंदू समाज की संरचना में किसी बदलाव की कोई आवश्यकता नहीं है। सच्चाई यह है कि संघ अच्छी तरह से जानता है कि बदलती परिस्थितियों में खुद को कैसे जीवित रखना है और समाज में सक्रिय भूमिका निभानी है। संघ के लिए लक्ष्य महत्वपूर्ण नीतियां और कार्यक्रम समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। संघ को इस बारे में कोई चिन्ता नहीं होती कि लोग इसके बारे में क्या निष्कर्ष निकालेंगे। अतीत में वह ऐसे कई समझौते कर चुका है। भारतीय संविधान और राष्ट्रीय ध्वज पर संघ को आपत्ति थी, लेकिन बदलते हालात में उसने इन्हें स्वीकार कर लिया। गांधी जी की हत्या पर संघ ने मिठाई बांटी थी और सरदार पटेल ने संघ पर गांधी जी की हत्या का माहौल बनाने के अपराध में पाबंदी लगाई थी, लेकिन बाद में आश्चर्यजनक रूप से संघ ने गांधीजी को अपना लिया। इसलिए अगर अब संघ अम्बेडकर को भी अपना रहा है, तो यह कोई वैचारिक बदलाव नहीं है, बल्कि वही पुरानी नीति है जिसमें केवल उद्देश्य महत्वपूर्ण है, न कि उसे प्राप्त करने का तरीक़ा।

इन बातों के बावजूद यह किताद संघ की बदलती नीति और कार्यक्रम को समझने में मददगार है, जो दर्शाती है कि संघ किस तरह दलितों और पिछड़ी जातियों के बीच अपने काम को आगे बढ़ा रहा है और भारतीय लोकतंत्र किस तरह हिंदुत्व लोकतंत्र में बदल रहा है। ■■

(पृष्ठ 31 का शेष)

के नारे लगाए गए और राष्ट्रपति कैस ने संसद को निलंबित कर के प्रधान मंत्री को घर भेज दिया। जनता से संबोधित होकर राष्ट्रपति ने सरकार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए और धमकी दी और राष्ट्रपति के आदेशों के उल्लंघन के मामले में, उन्होंने सशस्त्र बलों को पारंपरिक चेतावनी के बिना गोली मारने का आदेश दिया है।

मध्य पूर्व के राजनीति पर नज़र रखने वालों का मानना है कि अन्नहदा की ओर ये बढ़ाए गए सुलह के हाथ को राष्ट्रपति कैस जिस तरह झटक रहे हैं, उसके पीछे निश्चित रूप से सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, मिस्र और पश्चिम का हाथ है। संसद के निलंबन पर "सकारात्मक" प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, संयुक्त अरब अमीरात के विदेश राज्य मंत्री अनवर क़रक़ाश ने कहा, "ट्यूनीशिया को स्थिर करने का हर प्रयास सराहनीय है, जिसका यूएई पूर्ण समर्थन करता है।"

कोरोना लहर के बावजूद, सऊदी विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने 30 जुलाई को ट्यूनीशिया का दौरा किया और राष्ट्रपति क़ैस के साथ तीन घंटे की बातचीत की। बैठक के दौरान उग्रवाद पर अंकुश लगाने के उपायों पर विचार किया गया। सऊदी प्रिंस ने कहा कि उनकी सरकार, विशेष रूप से क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन सलमान, इस कठिन समय में राष्ट्रपति क़ैस के साथ खड़े हैं और ट्यूनीशिया को अस्थिर करने के किसी भी प्रयास का दोनों देश मिलकर मुकाबला करेंगे।

उन्होंने इस आंदोलन को कुचलने के लिए लाखों डॉलर खर्च किए और इसकी बुनियादें उखाड़ने पर बहुत सोच विचार किया। इसमें पाठ्यक्रम परिवर्तन, इज़राइल के साथ घनिष्ठ संबंध और मुस्लिम ब्रदरहुड को उखाड़ फेंकना शामिल है। लीबिया, सीरिया और यमन में सांप्रदायिक आग भड़काने के साथ मिस्र की निर्वाचित सरकार को केवल एक वर्ष में सैन्य तख्तापलट से उखाड़ फेंका गया। ट्यूनीशिया अरब स्प्रिंग की एकमात्र सफल निशानी है, जिसके खिलाफ एक संगठित अभियान दस साल से चल रहा है। ट्यूनीशिया का दर्द वही समझ सकता है जो देश की रक्षा के लिए वर्दी पहने और सर से कफन बांधे बैठे हैं।

जमीनी हकीकत पर सरसरी निगाह डालने से पता चलता है कि ट्यूनीशिया का हालिया विवाद 2013 में खेले गए मिस्र के नाटक की नई प्रति है। उस समय, मिस्र के सेकुलर और "लोकतंत्र समर्थक तत्वों" ने राष्ट्रपति मुर्सी पर "चरमपंथ" और "भ्रष्टाचार" का आरोप लगाते हुए एक अभियान शुरू किया।

आंदोलन के संचालक प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक और बुद्धिजीवी डॉ. मुहम्मद अलबरादई थे। मिस्र के सलफ़ी भी उसके साथ हो गए। विरोध के दौरान, ब्रदरहुड के कार्यालयों पर हमला किया गया और अलबरादई ने सेना को देश को बचाने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

अलबरादई को बहुत दुख है कि उन्होंने जनरल सीसी पर भरोसा कर लिया, जिसने वादा किया था कि राष्ट्रपति मुर्सी के अपदस्थ होते ही, नए चुनावों की घोषणा कर दी जाएगी जिसमें ब्रदरहुड को छोड़कर सभी दलों को भाग लेने की अनुमति होगी और सेना पूरी तरह तटस्थ रहेगा।

(मसूद अब्दाली एक वरिष्ठ स्तंभकार हैं। मध्य पूर्व के अहम मुद्दों का विश्लेषण इनका विशेष क्षेत्र है।)

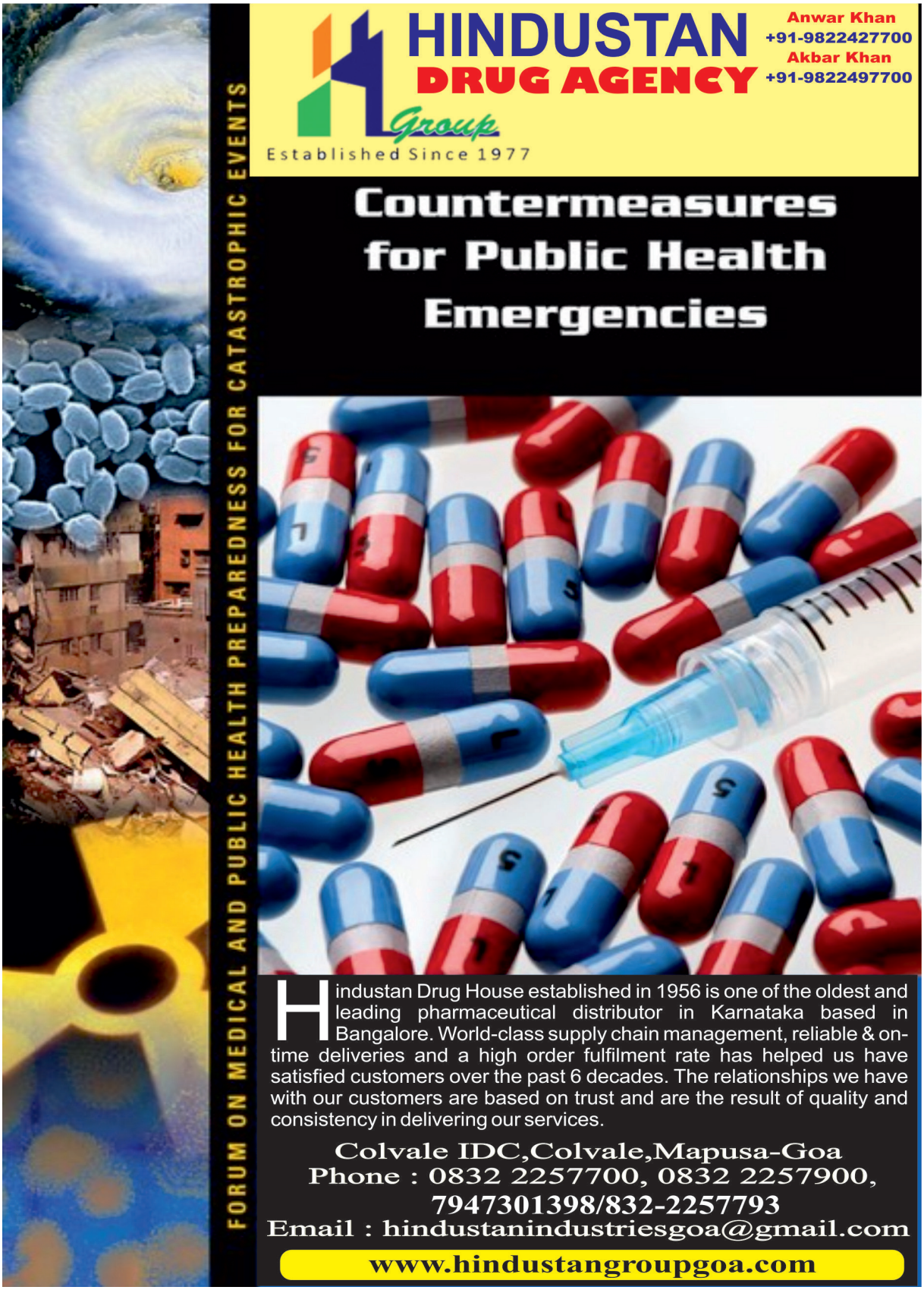
FORUM ON MEDICAL AND PUBLIC HEALTH PREPAREDNESS FOR CATASTROPHIC EVENTS
HINDUSTAN
DRUG AGENCY
Group
Established Since 1977
Anwar Khan
+91-9822427700
Akbar Khan
+91-9822497700
Countermeasures for Public Health Emergencies
Hindustan Drug House established in 1956 is one of the oldest and leading pharmaceutical distributor in Karnataka based in Bangalore. World-class supply chain management, reliable & on-time deliveries and a high order fulfilment rate has helped us have satisfied customers over the past 6 decades. The relationships we have with our customers are based on trust and are the result of quality and consistency in delivering our services.
Colvale IDC,Colvale,Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900,
7947301398/832-2257793
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com
www.hindustangroupgoa.com

करियर



संपादन प्रभाग

अनुभव और मार्गदर्शन अच्छे करियर में सहायक

बेहतर कैरियर के चुनाव का पहला पड़ाव है मार्गदर्शन। मार्गदर्शन किसी से लिया जा सकता है। अपने अभिभावकों, दोस्तों, परिचितों, रिश्तेदारों या कैरियर विशेषज्ञों से। अगर सही मार्गदर्शन न हो तो योग्य व्यक्ति भी ग़लत फ़ैसला ले सकता है। हालांकि आज के समय में ऐसे लोगों की ख़ासी संख्या है, जिनके लिए कैरियर तो महत्वपूर्ण है, लेकिन मार्गदर्शन महत्वपूर्ण नहीं। मार्गदर्शन की अहमियत इससे समझी जा सकती है कि यह कैरियर को बना या बिगाड़ सकता है।

अनेक परिचित, दोस्त और रिश्तेदार कैरियर के चुनाव को लेकर अपने-अपने अनुभवों को साझा करते हैं। सुझाव देते और मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन आज के वैश्वीकरण के दौर में जहां कैरियर के असंख्य विकल्प मौजूद हैं, तब सिर्फ़ इतना काफ़ी नहीं है। कैरियर के मामले में सही सुझाव और परामर्श की ज़रूरत ने एक नई जॉब पैदा कर दी है, जिसको कैरियर विशेषज्ञ कहा जा सकता है। ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है जो किसी कैरियर विशेषज्ञ से परामर्श लेना ज़्यादा लाभदायक समझते हैं। यहां यह भी कहा जा सकता है कि अगर दोस्तों और रिश्तेदारों के परामर्श के बाद भी फ़ैसला करने में किसी तरह की दुविधा महसूस हो रही हो तो कैरियर विशेषज्ञ की सहायता लेना लाभदायक हो सकता है। कैरियर का चुनाव करते समय यह बहुत ज़रूरी है कि आत्मविश्वास हो, कंफ्यूजन न हो और लक्ष्य स्पष्ट हो। यह तभी संभव है जब कोई बेहतर सुझाव या परामर्श देने वाला हो।

ऐसा देखा गया है कि एक समय बीत जाने के बाद कुछ लोगों को लगता है कि अब कैरियर बनाने का समय नहीं रहा। हालांकि ऐसा नहीं है। अपनी पसंद का कैरियर चुनने के मामले में उम्र और समय को आड़े नहीं आने देना चाहिए। अगर अवसर है तो उसका फ़ायदा उठाना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए।

कैरियर की शुरुआत कई तरह से होती है। कुछ लोग स्कूल की पढ़ाई के बाद से कैरियर का चुनाव करना चाहते हैं, कुछ लोग कॉलेज की शिक्षा के बाद। इनमें अनेक लोग ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ़ पैसा कमाने और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिए नौकरी कर रहे होते हैं। ये अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं होते। दूसरे शब्दों में कहें तो वे किसी और क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाह रहे थे, लेकिन सही समय पर सही मार्गदर्शन न मिल पाने या कुछ परिस्थितियों के कारण अपनी मंज़िल तक नहीं पहुंच सके।

जो लोग स्कूली शिक्षा के बाद कैरियर बनाना चाहते हैं, उनको कैरियर के चुनाव को लेकर जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। एक तो इस उम्र में अनुभव का अभाव होता है। दूसरे बाद में परिस्थितियों के अनुसार सोच भी बदलती है, इसलिए वे थोड़े-थोड़े समय के लिए कई तरह की जॉब करके अनुभव हासिल कर सकते हैं। पार्ट टाइम जॉब करने का आप्शन भी उनके लिए बेहतर हो सकता है। अनुभव



हासिल करने के बाद यह तय करें कि रुचि और अनुभव के आधार पर वे किस तरह का कैरियर चुने। इसके बाद भी अगर कोई कन्फयूजन हो तो कैरियर विशेषज्ञ से परामर्श ले सकते हैं।

सही मायने में कैरियर का अर्थ होता है कि जिस काम को करना सपना रहा हो, पसंद हो या उसको करने में मन लगे। उस काम को करने में बोरियत न महसूस हो, रोज़ नए उत्साह के साथ काम को किया जाए। जिन लोगों को अपना मन पसंद कैरियर मिल जाता है वे उसमें बहुत आगे जाते हैं, कुछ नया करते हैं और नई चीज़ों को जन्म देते हैं, लेकिन वहीं यह भी देखा गया कि जॉब चाहे जितनी अच्छी हो अगर मन के अनुसार नहीं है तो उसमें तरक़्क़ी की संभावना कम हो जाती है और काम में उत्साह नहीं रहता। ऐसा देखा गया है कि एक समय बीत जाने के बाद कुछ लोगों को लगता है कि अब कैरियर बनाने का समय नहीं रहा। हालांकि ऐसा नहीं है। अपनी पसंद का कैरियर चुनने के मामले में उम्र और समय को आड़े नहीं आने देना चाहिए। अगर अवसर है तो उसका फ़ायदा उठाना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए। आमतौर पर ऐसा देखा गया है कि इंसान की जिस तरह की व्यक्तिगत रुचि होती है, वह उसी तरह के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहता है।

आमतौर पर समाज में आईएएस, डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनने को ही अच्छा कैरियर माना जाता है, लेकिन यह सही नहीं है। बल्कि हर व्यक्ति की पसंद अलग-अलग हो सकती है। संभव है कि वह इन क्षेत्रों को छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहता हो और उसी में उसको संतुष्टि मिलती हो। जैसे कोई पेंटर, सिंगर, डिज़ाइनर, लेखक, कवि, समाज सेवी, बिजनेसमैन आदि बनना चाहे तो इसी काम में उसको संतुष्टि मिलेगी।

संभव है कि कुछ लोग अपने कैरियर के चुनाव को लेकर भ्रमित हो और वे न तो अपनी योग्यता का सही आकलन कर पा रहे हों, न कैरियर का चुनाव कर पा रहे हों। ऐसे लोगों को कैरियर परामर्श विशेषज्ञ की ज़रूरत पड़ती है। यहां से सही सलाह के साथ आगे का कैरियर चुनने में आसानी होगी। भ्रमित होने पर वे उन लोगों से मिल सकते हैं, जिन्होंने कैरियर काउंसलिंग से सुझाव लिए हैं। अपने कंफ्यूजन को दूर करने के लिए पहले इंटर्नशिप भी कर सकते हैं। इंटर्नशिप से प्रोफेशनल लाइफ़ को समझने में मदद मिलेगी। इंटर्नशिप के दौरान अनुभवी लोगों से संपर्क होता है और उनसे कैरियर के बारे में महत्वपूर्ण सलाह मिलती है, जिससे आगे के लिए फ़ैसला करने में आसानी होती है। ■■



डॉक्टर मुबाशशिरा फ़िरदौस

डिजिटल दुनिया का बनावटी कल्चर

लॉकडाउन ख़त्म हुआ तो क़रीबी रिश्तेदारों के साथ मौज-मस्ती के लिए एक ख़ूबसूरत पहाड़ी पर जाने का प्लान तैयार हुआ जो कि बेहद ख़ूबसूरत स्पॉट था।

दूर तक फैली हुई हरी-भरी घास, नीले आसमान पर डूबते हुए सूरज ने अपने रंग में रंगते हुए मानो आसमान को सुनहरा रंग पहना दिया था। क़रीब में मौजूद पानी का बहता हुआ चश्मा माहौल को मनमोहक बना रहा था। एक चट्टान पर बैठकर कंकरियां उठाकर फेंकते-फेंकते हम इस क़दर गुम हो गए कि गुज़रे हुए वक़्त का अंदाज़ा लगाना मुश्किल हो गया। इस ख़ूबसूरत दृश्य ने सारी थकान उतार दी। सर उठाकर देखा तो साथ आए रिश्तेदारों के बच्चे और बड़े अपने-अपने मोबाइल थामे तस्वीरें लेने में मगन थे। लॉकडाउन में एक ही जैसे दिन गुज़ारकर इस तरह खुली फ़िज़ाओं में सांस लेते हुए प्राकृतिक दृश्यों को देखना भी नेमत की मानिंद लग रहा था।

हे अल्लाह! आपका रहम व करम है कि हमें बन्द कमरों से निकालकर खुली फ़िज़ा में मौज-मस्ती करने का मौक़ा दिया लेकिन जो दृश्य आंखों के सामने था उस पर अफ़सोस गहरा हुआ। कोई भी हाथ डिजिटल डिवाइस से ख़ाली नहीं था, कोई सेल्फ़ी ले रहा था, कोई फैमली फ़ोटो में मगन, कोई प्राकृतिक दृश्यों को कैमरे में हू-ब-हू उतार लेने का शौक़ीन नज़र आ रहा था। वहीं कुछ बच्चे आसमान के रंगों को शूट कर रहे थे। हर एक की ज़ुबान पर यही था कि स्टेटस लगाना है, पोस्ट बनानी है, फ़लां को जलाएंगे आदि। यहां तक कि बच्चों के अलावा औरतें अपने साथ लाये टिफ़िन बॉक्स की भी तस्वीरें ले रही थीं।

ठंडी आहें भरते हुए हम कहीं अपने बचपन में खो गए। इस मोबाइल से पहले हमने भी तो बचपन गुज़ारा है। रेत में ग़ौर करते हुए न जाने कितने लम्हे गुज़रे, पानी में कंकरियां फेंकना और उससे बनने वाले तरंगित रेखाओं पर ग़ौर करना एक आदत-सा हुआ करता, किसी तिनके को उठाकर मिट्टी में कुछ लिखने की कोशिश में घण्टों बीत जाते थे। आसमान में बिखरे बादल को तकते हुए ख़्यालों के पर्दे पर उकेरे गए दृश्य बादलों में नज़र आते।

गीली मिट्टी में घर बनाया करते थे, प्रकृति से मित्रता दिल का सुकून बना करती, झुंझलाहट छूकर न गुज़रती, सहनशक्ति को बढ़ाया करती। सूर्य उदय के समय ख़ामोश विचारों का लुत्फ़ आया करता, सुबह सवेरे जागते हुए चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देती, दूर कहीं से मुर्ग़े की बांग ज़रूर आया करती, दोपहर में कोयल की कूक सुनाई देती, घर के गार्डेन में खिलने वाले फूल रिश्तेदारों को तोहफ़े में दिया करते थे।

इस डिवाइस के बाद वह बचपन कहीं खो-सा गया, ग़ौर-फ़िक्र अब

फ़साना बन चुकी है, अब एक ही फ़िक्र सवार रहती है कि सामने उपस्थित प्राकृतिक दृश्य निगाहों में क़ैद करने से ज़्यादा कैमरे में खींच लें और दूसरों को दिखाएं। ये लम्हे आमने-सामने से कम क़बूल हैं। वक़्त गुज़र जाने के बाद देखेंगे, लेपटॉप के अलबम में रखकर बाद में देखेंगे, दूसरे को दिखाकर गर्व महसूस करेंगे। इंसान महफ़िल में होकर भी तन्हा रहने लगा। प्राकृतिक नज़ारे सामने हैं लेकिन इंसान को उसमें गुम होने की फ़ुरसत नहीं। सामने मौजूद सुकून से ज़्यादा इंसान दूसरे को दिखाने की दौड़ में सुकून से ख़ाली होता जा रहा है।

ब्रह्माण्ड की सुंदरता संतुलन है, जीवन की सुंदरता संतुलन है। इंसानी आदतों का असन्तुलन मानव जीवन के संतुलन को बिगाड़ रही मानसिक उलझनों का शिकार बनती जा रही है।

हर एक चीज़ों की तस्वीर लेने की दिखावे की आदत ने इतना प्रभावित किया है कि इंसान अब मौक़ा-ए-वारदात पर हो तो ज़रूरतमन्द लोगों की मदद करने से ज़्यादा वीडियो बनाने में दिखाई देता है ताकि तैयार वीडियो किसी दूसरे को दिखा सके।

बिल्कुल इस तरह ज़रूरतमंदों की मदद से भी अच्छी फीलींग्स है लेकिन अब वह अदा भी कैमरे की लेंस में भरकर दूसरों को बताने की आड़ में ख़ुद छुपे पाखण्ड को आश्रय देता है। इस ख़्याल से वह वंचित होकर कि ज़रूरतमन्द पर कैमरे निकाल कर तस्वीर बनाने से क्या गुज़र रही है। आत्म-सम्मान को ठेस पहुंचती है। बच्चे इस हरकत को किस नज़र से देख रहे हैं। झूठी ख़ुशियों की दौड़ ने इंसान को असंतुष्ट कर दिया है।

घर के बड़े भी ग़ैर-ज़िम्मेदार बनते जा रहे हैं। एक फैमिली ने तैराकी के मंज़र को कैप्चर करने के लिए बच्चे के हाथ में वीडियोग्राफ़ी के लिए मोबाइल दिया उसी दौरान बाप, मां और भाई हादसे का शिकार हो गए। डूबने का मंज़र शूट करते हुए मासूम बच्चा रोने लगा कि मां-बाप और भाई वापस क्यों नहीं आ रहे हैं, नन्हें मासूम पर जो गुज़री उसका ख़ुदा ही हाफ़िज़ है, लेकिन मां- बाप का यह रवैया ग़ैर-ज़िम्मेदाराना था।

इस तरह इस रवैये की वजह से बच्चे को क्रूर बनाया जा रहा है। पिछले दिनों कोरोना से तड़पते हुए दादा को जब एक कमरे में डाल दिया गया तो एक बच्चे ने खिड़की से साइलेंट वीडियोग्राफ़ी की लेकिन मदद के लिए आगे नहीं बढ़ सका यहां तक कि अपने दादा की उखड़ती सांसें और हसरत भरी निगाहें भी उस बच्चे पर बेअसर रहीं। ग़ौर करें तो हम बच्चों को एहसास से ख़ाली रोबोट बना रहे हैं। इस बनावटी कल्चर के ज़रिये हम अपने बच्चों को क्या दे रहे हैं? इसकी आदत डालकर हम कौन-सी फ़सल काटेंगे, हम कहां जा रहे हैं? ■■

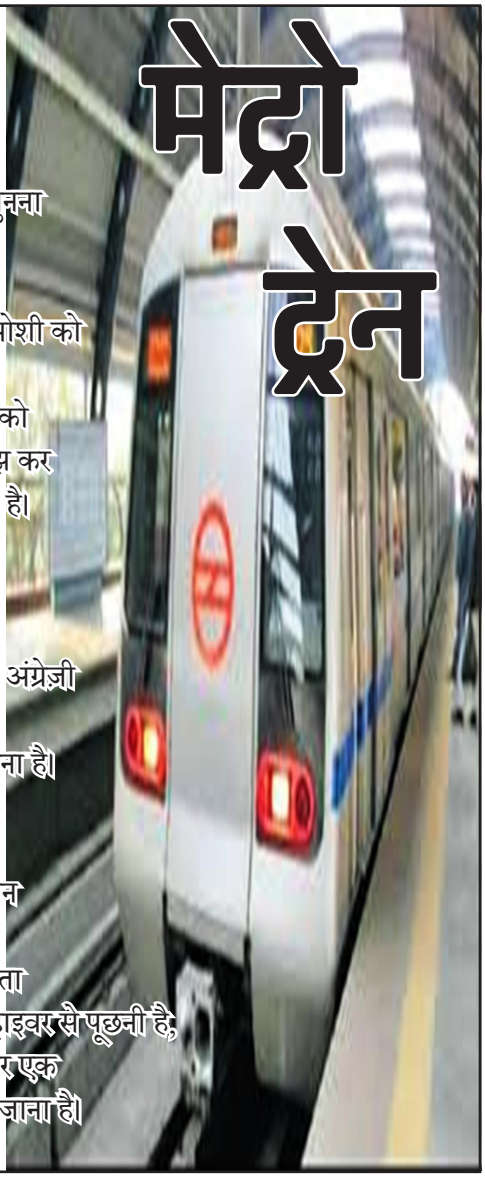

मेट्रो ट्रेन

मेट्रो ट्रेन में घुसते ही आपको
अजनबियत ओढ़ लेनी है
किसी से बात नहीं करनी
किसी की ओर नहीं तकना
मुस्कुराना नहीं, संगीत नहीं सुनना
प्रेम नहीं करना।

मेट्रो ट्रेन में पसरी असह्य ख़ामोशी को
सन्नाटा नहीं कहना,
निर्देश देती मशीनी आवाज़ों को
आधुनिकता का वरदान समझ कर
अपने गंतव्य तक सहते रहना है।

मेट्रो ट्रेन में चढ़ते ही आपको
सभ्य होने का स्वांग रचना है
हेलो, प्लीज, सॉरी और दूसरे अंग्रेज़ी
शब्दों के ग़लत उच्चारण पर
मन ही मन ग्लानि से भरते रहना है।

मेट्रो ट्रेन में आपको
मेट्रो ट्रेन सभ्यता के खोखलेपन
की शिकायत नहीं करनी
न इस सभ्यता की आक्रामकता
स्टेशन के नीचे खड़े रिक्शा ड्राइवर से पूछनी है,
सोचना नहीं है, नेटफ्लिक्स पर एक
एपिसोड देखना है और उतर जाना है।

–ओसामा हमीद

कहानी



फ़हीम आज़मी
समय हिंदी डॉट कॉम

आर्ट का पुल

पहले तो सारा इलाक़ा एक ही था और उसका नाम भी एक ही था। इलाक़ा बहुत उपजाऊ था। बहुत से बाग़, खेत, जंगली पौधे, फूल और झाड़ियां सारे क्षेत्र में फैली हुई थीं। इस इलाक़े के वासियों को अपने जीवन की आवश्यकताएं जुटाने के लिए किसी और इलाक़े पर आश्रित नहीं होना पड़ता था। खेतों से अनाज, पैसों से मकान बनाने और जलाने के लिए लकड़ियां, भट्ठों से पकी हुई ईंटें, पास के बाग़ों से फूल और साग-सब्ज़ी, पास के तालाब से मछलियां...अर्थात् आवश्यकता के सभी पदार्थ उपलब्ध थे।

धीरे-धीरे पास के व्यापारिक नगर से व्यापारिक सभ्यता और विकास की लहरें इस इलाक़े की ओर बढ़ने लगीं और एक दिन इस इलाक़े में बहुत बड़ा नाला खोदा गया जिसने इस क्षेत्र को दो भागों में बांट दिया। किसी ने कहा कि यह गड्ढा बिजली के तारों को खम्भे के ऊपर से ले जाने के स्थान पर धरती के नीचे दबाने के लिए खोदा गया है। कोई कहता था कि इस इलाक़े में टेलीफ़ोन आने वाला है और यह टेलीफ़ोन की लाइनें बिछाने के लिए खोदा गया है। अथवा जितने मुंह उतनी बातें बस सवेरे ही ट्रेक्टर और कुटियर और उसके साथ कुछ मज़दूर आ जाते थे, फावड़े और गेंती के साथ। ये लोग इस गड्ढे को गहरा करना शुरू कर देते थे और शाम को चले जाते थे। यदि इनसे कोई पूछता था तो बस यही कहते थे कि ठेकेदार से पूछ लो, हमें नहीं मालूम कि यह गड्ढा क्यों खोदा जा रहा है।

दिन-प्रतिदिन गड्ढा गहरा होता गया और एक दिन उसने इलाक़े के बीच में एक सूखे नाले का रूप धारण कर लिया। अब इसको पार करना लगभग असम्भव-सा हो गया और इस प्रकार नाले के इस पार के लोगों तथा उस पार के लोगों का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। कभी-कभी नाले के इस पार के लोग उस पार के लोगों से नाले के दोनों ओर खड़े होकर वार्तालाप कर लेते थे और अधिकतर बात का विषय यह नाला ही होता था। उन्हें उन कोयलों, फांख्ताओं और मैनाओं से बहुत स्पर्धा होती थी, जो बिना किसी बन्धन के नाले के इस पार के पेड़ों से उड़कर उस पार के पेड़ों पर बैठ जाते थे और इस पार के खेत

से उड़कर उस पार के खेत में दाने चुगने लगते थे। और एक दिन ठेकेदार के आदमी चले गए। नाला उसी प्रकार खुदा रहा। सम्भवत:, दूसरा ठेकेदार, जिसे तार बिछाना था या तीसरा ठेकेदार, जिसे गड्ढा पाटना था, अभी तक निश्चित नहीं किया गया था। या वह किसी दूसरे इलाक़े में व्यस्त था। यह सूखा नाला यूं ही पड़ा रहा, यहां तक कि वर्षा आई और यह पानी से भर गया। धीरे-धीरे उसके दोनों ओर के किनारे टूटने लगे और उसने एक नदी का रूप धारण कर लिया, जो आगे चलकर एक बड़े नाले में मिल जाती थी और फिर उस दरिया में मिल जाती थी, जो इलाक़े के पास ही बहता था।

सर्दी आई तो लोगों ने सोचा कि नाले का पानी ख़ुश्क हो जाएगा और शायद ठेकेदार के आदमी उसको पाट दें। कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने उसे स्वयं पाटने का विचार किया, परन्तु जैसे ही सर्दी समाप्त हुई और गर्मी आई, आस-पास की पहाड़ियों पर बर्फ़ पिघलने लगी। यह बर्फ़ पहले भी पिघलती थी, परन्तु छोटी-छोटी नालियों के रूप में फैल जाती थी और तेज़ी से ढलान की ओर बहकर उनका पानी बड़े दरिया में मिल जाता था। यदि कहीं पानी फैला भी तो अधिक समय तक नहीं रुकता था, किन्तु अब सारा पानी बहकर इलाक़े के उस नाले में आ गया। गर्मी बीती, वर्षा आई, नाला और विस्तृत हो गया। फिर सर्दी आई और पानी उसी प्रकार बहता रहा। फिर पहाड़ियों पर बर्फ़ पिघली और नाला अधिक विस्तृत हो गया। किनारे और टूटे तथा यह नाला हर बरस चौड़ा होता गया और फिर एक बड़े दरिया ने इलाक़े को दो भागों में बांट दिया। इलाक़े के निवासियों को दो भागों में बांट दिया। रिश्तेदार कुछ इधर और कुछ उधर रह गए और जब मुहम्मद ख़ान की पुत्री के विवाह की समस्या सामने आई, तो मुहम्मद ख़ान की पत्नी ने कहा, "तो फ़िक्र काहे की है? तुम्हारे भाई के बेटे के साथ तो बचपन में रिश्ता हो चुका है।"

मुहम्मद ख़ान पहले तो चुप रहे, फिर उन्होंने एक ठंडी सांस ली और बोले, "क्या बात करती हो? अरे, वे लोग उस पार के हैं। अब हमारा उनसे क्या वास्ता! अपने इलाक़े में रिश्ता खोजो।"

"तो ऐसी कौन-सी बात है, हम एक ही तो हैं। वह उस पार रहता है, तो क्या हुआ! तुम्हारा भाई ही तो है।"

"नहीं, अब वह उस पार रहता है, बीच में दरिया है। इस पार के लोग उस पार के लोगों से अलग हैं। वह मेरा भाई था, लेकिन तब, जब दरिया नहीं था।"

"तो दरिया ख़ून के रिश्ते को तो नहीं तोड़ सकता।"

"हां, तोड़ सकता है। दरिया सरहदें (सीमाएं) बना देता है। मुल्कों को अलग कर देता है। इनसानों को अलग कर देता है।"

"यह तुम कह रहे हो।"

"मैं तो वही कह रहा हूं जिसे और लोग कहते हैं। और फिर यह भी तो नहीं कि दरिया को पार करके आसानी से इधर से उधर जाया जा सके। दरिया पर पुल भी नहीं है। उसमें नाव भी नहीं चलती।"

और हुआ भी यही था। पुल बनाने के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए थे। जब भी पुल बनता था, एक मौसम भी नहीं निकालता



था। सर्दी में बनता था, तो गरमी में टूट जाता था। पहाड़ों से आने वाले पानी का वेग बहुत तेज़ होता था। दरिया के किनारे भी टूट जाते थे। मिट्टी बह जाती थी। लोग मिट्टी भरकर लकड़ी का पुल बनाते थे। कोई सीमेंट का पक्का पुल तो बनता ही नहीं था। भला मिट्टी का पुल कैसे टिका रहता। और नाव, उसका भी प्रयास किया गया। कुछ लोगों ने सोचा कि पुल नहीं बनता और लोग दरिया को पैदल भी पार नहीं कर सकते, तो नाव ही बना लें। उसी पर चढ़कर दरिया पार कर लिया करेंगे। परन्तु हुआ यूं कि जब पहली नाव बनी तो मंगू दूध वाला सवेरे-सवेरे आया और मुहम्मद ख़ान से बोला, ''ख़ान साहब! सुना आपने, वह जो चार घड़ों को उलटा करके और ऊपर कीकर तथा सरपत का मचान बनाकर नाव बनाई गई थी, उसके दो घड़ों में ज़हरीले सांप घुस गए और दो मुसाफ़िरों को डस लिया। अब मुखिया जी ने कहा है कि नांव नहीं चलेगी।''

''क्यों नहीं चलेगी! अरे ऐसे हादसे (दुर्घटनाएं) तो होते ही रहते हैं। आइन्दा (भविष्य में) एहतियात (सावधानी) से काम लिया जाएगा।''

''क्या एहतियात (सावधानी) होगी? घड़ा तो उलटा होता है। पानी के अन्दर से सांप निकलकर बैठ जाए, तो वह दिखाई भी नहीं देता और इतना वक़्त किसके पास है कि वह मचान को पीटता रहे और सांप को भगाता रहे।''

''अरे हर मुश्किल काम में एहतियात (सावधानी) रखनी पड़ती है। अगर हम कुछ दिन तक मचान पीटते रहेंगे और नांव चलती रहेगी, तो सांप ख़ुद ही डर कर भाग जाएगा।''

''मगर चलेगी कैसे? मुखिया ने तो रोक दिया है, घड़े तोड़ दिए गए हैं?''

मुहम्मद ख़ान ने मुखिया को धीरे-से एक मोटी-सी गाली दी और चुप हो गया। वह और कर ही क्या सकता था! मुखिया से कौन झगड़ा मोल लेता! परन्तु मुहम्मद ख़ान का दिल नहीं माना। उसने सोचा कि पंचायत बुलाई जाए। हो सकता है पंचायत के कहने से मुखिया मान जाए। तब मुहम्मद ख़ान ने लोगों के घर जा-जाकर उन्हें समझाना आरम्भ कर दिया, ''देखो न। आख़िर इसमें क्या हर्ज है। दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) तो मुहब्बत पर चलता है। नफ़रत से तो कोई मसला (समस्या) हल नहीं होता। फिर तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे भी रिश्तेदार, दोस्त उस पार रह गए हैं। अगर हमारे बीच यह दरिया रुकावट है, तो क्या हुआ। नांव चलाने से हम अपना मेल-जोल तो क़ायम रख सकते हैं। अरे घुस गया होगा सांप। सांप तो घरों में भी घुस जाते हैं। उससे कोई घर थोड़े ही छोड़ देता है।''

कुछ लोगों ने मुहम्मद ख़ान की बात मानी, कुछ चुप रहे और कुछ ने उसका कड़ा विरोध किया।

''तुम क्या रिश्तेदारों की बातें करते हो। उस पार के लोगों से कैसा रिश्ता? इतने दिनों में सब कुछ तो बदल गया। देखते नहीं हो, उनकी सलवारों के घेरे कितने बढ़ गए हैं। चादरों में कितना फ़र्क़ है। खाने में खटाई भी बहुत ज़्यादा होती है। रोटी भी कितनी पतली होती है। मकान की ईंटें कितनी बड़ी होती हैं। और वे लोग तोता भी तो नहीं पालते। उनकी मिट्टी बिल्कुल नमकीन है। इधर हमें देखो, हम मिट्टी के कितने सुन्दर बर्तन बनाते हैं। हमारी धरती भी तो कितनी ज़रखेज़ (उपजाऊ) है। नहीं जी, अब हमारा उनसे क्या रिश्ता! तुम अपनी सरहदों में लोगों से रिश्ता जोड़ो। अब तो उनकी ज़ुबान भी तुम्हारी समझ में न आएगी।''

पंचायत हुई। लोग बोलते रहे। धीरे-धीरे, जोश से। बूढ़े और जवान सब बोले, लेकिन मुखिया ने बस एक बात कह दी, ''तुम नांव बनाने की बात कहते हो। तुम तो बस यही समझते हो कि नांव में बैठकर लोग इस पार से उस पार जाएंगे। देखो अपनी धरती की तरफ़। देखो अपने लहलहाते खेत। हम कितने ख़ुश हैं। क्या हमारे खेतों का अनाज और हमारे पेड़ों के फल नांव से उस पार न जाने लगेंगे? फिर तुम क्या करोगे, किसको रोकोगे। नहीं जी, हम अपने इलाक़े में ख़ुश हैं। अपनी रोटी उनको दे देंगे, तो ख़ुद क्या खाएंगे। पेट से बढ़कर भी कुछ और हो सकता है?''

मुखिया पंचायत में अकेला तो आया नहीं था, हाथों में लाठियां और बल्लम लिए हट्टे-कट्टे जवान साथ थे। मुखिया तो अपनी जगह पर बैठ गया। परन्तु ये जवान भीड़ के चारों ओर खड़े हो गए। अपनी लाठियों और बल्लमों को यूं उठाए रखा कि सबको दिखाई दे।

मुखिया बोल चुका, तो लोगों में काना-फूसी होने लगी। फिर लोग ऊंचे स्वर से बोलने लगे। फिर विवाद और प्रतिवाद आरम्भ हो गया। हाथापाई की नौबत आ गई और पंचायत समाप्त हो गई।

आज मुहम्मद ख़ान के भाई के बेटे का विवाह था। दरिया के पार शहनाई की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह आवाज़ बहुत सुरीली लग रही थी। मुहम्मद ख़ान दरिया के किनारे बैठ आवाज़ को सुन रहा था और सोच रहा था काश! यह बारात उनके घर में आई होती। परन्तु यह कैसे सम्भव था। बीच में दरिया था और बारात को तो उसी ओर जाना था। दरिया को कैसे पार किया जा सकता था।

मुहम्मद ख़ान सोचने लगा यहूदियों ने कहा था कि ख़ुदा इस्राईल का ख़ुदा है। फिर इस्राईल बारह क़बीलों में बंट गए।

फिर उनके बीच सरहदें खिंच गईं फिर उनकी ज़बानें बदल गईं। फिर वे एक-दूसरे के दुश्मन हो गए मगर ख़ुदा एक ही रहा, सबका ख़ुदा।

फिर अरब से आवाज़ आई। हमारा भी ख़ुदा वही है। पूरब का ख़ुदा वही है, पश्चिम का ख़ुदा वही है और आज सब कहते हैं, हम सबका ख़ुदा वही है। फिर दरिया ने क्या बदला, ख़ुदा हो तो बदला नहीं। शहनाई की आवाज़ फिर गूंजी। और मुहम्मद ख़ान ने सोचा दरिया उस आवाज़ को तो रोक नहीं सका और रोक भी नहीं सकता। यह तो दरिया के पानी से टकराकर और भी अच्छी लगती है।

और फिर देखते-ही-देखते कुछ और लोग मुहम्मद ख़ान के पास आ बैठे और सोचने लगे क्या अच्छी आवाज़ आ रही है, दरिया के उस पार से। हमारी सरहदें अलग हैं और बीच में दरिया है, मगर यह गाने-बजाने की आवाज़ कितनी मधुर लग रही है। शादी हो गई और शहनाई की आवाज़ भी बन्द हो गई, परन्तु अब तो लोगों को चस्का पड़ गया था। दरिया के किनारे पर प्रतिदिन सायंकाल को मेला लगने लगा। उस पार के गीत और सितार की मधुर आवाज़ सुनते रहते और फिर उस पार के लोग भी अपनी तरफ़ के किनारे पर बैठने लगे, इस पार के गीत सुनने के लिए।

दरिया के पानी से छनकर आने वाली मधुर आवाज़ कितनी दर्द भरी थी, कितनी सुरीली। और फिर इन आवाज़ों के साथ और बहुत कुछ आया। दरिया के किनारों पर पिकनिक होने लगी। पकवान पकने लगे। वर्षा से बचने के लिए छप्पर बन गए। बैठने के लिए चबूतरे और भोजन की सुगन्ध और गाने की महक और शरीरों की झलक। अब दोनों तरफ़ के इलाक़ों में नफ़रत का एहसास समाप्त हो गया था।

एक दिन इस इलाक़े का मुखिया आया और कहने लगा, "तुम्हारे यहां गाने वालों और शायरों की क्या कमी है कि तुम उस पार के गानों की आवाज़ इतने शौक़ से सुनते हो। अरे, अपने इलाक़े के गाने गाओ! अपने इलाक़े वालों की आवाज़ सुनो। बस्ती में जाकर बैठो। वे तो उस पार के लोग हैं।"

परन्तु मुहम्मद ख़ान बोला, "मुखिया जी! अब यह तुम्हारे बस की बात नहीं है कि इनको रोको। इन्हें अब नांव की ज़रूरत नहीं। ये तो आसानी से उस पार चले जाते हैं आर्ट के पुल पर से...।"

और इस बार किसी ने मुहम्मद ख़ान की बात को नहीं काटा।

मुखिया अपनी आंखों पर दाएं हाथ की हथेली से साया करके और उचक-उचककर दरिया पर बना हुआ पुल तलाशने लगा। ■■

(अनुवाद : शम्भु यादव)



انجمن ترقی اردو جھارکھنڈ

اردو زبان اور تعلیم کے تحفظ و بقا پر خصوصی توجہ دیں

ایک اہم اپیل

۱۔اردو کی مادری زبان کی حیثیت سے تعلیم وتدریس پر خصوصی توجہ دیتے ہوئے اپنے بچوں اور بچیوں کو لازماً اردو لکھنا، پڑھنا، سکھائیں، اسے گھر گھر رائج کریں اور انفرادی اور اجتماعی دونوں سطحوں پر اس کا بہ ہرصورت نظم کریں۔اشد ضروری ہے کہ ہر محلے اور ٹولے میں اردو کے آزاد مکاتب قائم کیے جائیں اور صاحب استطاعت افراد کے تعاون سے اردو اور اس کے ساتھ دینیات کی مفت تعلیم کے انتظام کو یقینی بنائیں۔

۲۔اپنی رہائش گاہ پر نام کی تختی اور دکان کے سائن بورڈ اردو میں بھی لگائیں۔

۳۔شادی بیاہ اور دیگر تمام تقریبات کے دعوت نامے اردو میں لازماً جاری کریں۔

۴۔اردو جھارکھنڈ کی دوسری سرکاری زبان ہے۔لہذا سرکاری محکموں اور دفتروں میں عرضیاں اور درخواستیں ضرور بالضرور اردو میں دیں۔

۵۔اپنے اداروں اور تنظیموں سے متعلق اعلانات اور اشتہارات اردو میں التزماً شائع کرائیں اور اس کو اولیت دیں۔

۶۔اپنے پسندیدہ اردو اخبارات اور اچھے اور صحت مند اردو رسالے اور کتابیں برابر مطالعے میں رکھیں اور انہیں اپنی حیثیت اور اہلیت کے مطابق خرید کر پڑھنے پر توجہ دیں۔اپنے بچوں کو بھی ان کے لیے شائع ہونے والے صاف ستھرے رسائل فراہم کریں اور ان سے استفادے کا موقع دیں۔

۷۔اردو کے جن اسکولوں میں اردو کی ابتدائی درسی کتابیں حکومت کے ذریعہ فراہم نہیں کی جاتی ہیں وہاں اردو کی تدریس کا انتظام کرنے اور اسے جاری رکھنے کی کوشش کریں۔

۸۔اردو کے جو سرکاری نیز غیر سرکاری اسکول اردو میں درسی کتابوں کے فراہم نہ کیے جانے کی وجہ سے ہندی میڈیم اسکول میں تبدیل ہوتے جارہے ہیں ان کی اردو ذریعہ تعلیم کے اسکول کی حیثیت سے پہچان بحال کرنے اور قائم رکھنے پر توجہ دیں۔

۹۔مادری زبان میں لازمی ابتدائی تعلیم کے بنیادی آئینی حق (A 350) کے تحت اردو سکولوں میں پہلے سے آٹھویں درجے تک اردو کی تعلیم کا کلی طور پر نظم کرنے اور اسے ذریعہ تعلیم وامتحان کی حیثیت سے سکنڈری اور انٹر (2+) کی سطح تک جاری رکھ کر اردو تعلیم کے نظام کی بنیاد مستحکم کرنے پر توجہ دی جائے۔

۱۰۔اردو اسکولوں کی انتظامیہ، معلمین اور انجمن ترقی اردو سے اس سلسلے میں خصوصی تعاون اور ان کی رہنمائی حاصل کی جاسکتی ہے۔

منجانب عہدہ داران واراکین انجمن ترقی اردو، جھارکھنڈ

आख़िरी पन्ना



शेख़ मुहम्मद
आमिर क़ुरैशी

आलोचना और सब्र

मौजूदा हालात को देखते हुए ये कहना ग़लत नहीं होगा कि तीखी आलोचना और असहिष्णुता एक महामारी की तरह समाज के हर वर्ग में पैठ बना चुकी है और दैनिक जीवन की तरह यह हमारी सामान्य आदतों में शामिल होने लगी है। सुबह सवेरे जैसे ही हम नित्य क्रिया से निवृत्त होते हैं हमारे मन- मस्तिष्क में आलोचना और असहिष्णुता का कीड़ा कुलबुलाने लगता है और उस कीड़े की कुलबुलाहट रात गए बिस्तर पर जाने तक जारी रहती है।

ऐसे तो आलोचना का पहला वार ही कड़वाहट को जन्म देता है, मगर लगातार एक के बाद दूसरी आलोचना माहौल को तनावपूर्ण और दूसरे पक्ष को प्रतिक्रिया देने पर मजबूर कर देती है, जिससे दोनों पक्षों के बीच तीखी नोक-झोंक शुरू हो जाती है और फिर जूतम पैज़ार की नौबत आते देर नहीं लगती। इस स्थिति में न सिर्फ़ दोनों पक्षों बल्कि उनसे जुड़े अन्य दोस्त, रिश्तेदार, नातेदार भी न चाहते हुए इस झगड़े की ज़द में आ जाते हैं और कभी ऐसा भी होता है कि वो भी उस विवाद में शामिल होकर मानसिक और मनोवैज्ञानिक उलझनों का शिकार हो जाते हैं।

यूं तो आलोचना कोई बुरी बात नहीं है। अगर रचनात्मक और कल्याणकारी सोच के साथ की जाए तो सुधार का आधार बनती है, जबकि बेतुकी और अनावश्यक आलोचना या ख़ामिया ढूंढने के लिए आलोचना सुधार की जगह बिगाड़ पैदा करती है।

समाज में किसी भी वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले किसी भी व्यक्ति में निर्माण और विध्वंस दोनों पक्ष पाए जाते हैं, इसीलिए आलोचना करते वक़्त किसी व्यक्ति का चरित्र हनन करने की जगह उस व्यक्ति की निजता का सम्मान करते हुए उसके किसी विशेष कथनी या करनी में सुधार की भावना के साथ आलोचना करे तो प्रबल सम्भावना है कि सकारात्मक परिणाम निकलेंगे, क्योंकि दोषपूर्ण विचारों या कार्यों पर आलोचना करने की जगह अगर जाने-अनजाने में व्यक्तित्व का चरित्र हनन या अपमानित करने की कोशिश की जाती है, तो प्रतिक्रिया के रूप में ऐसे ही निगेटिव जवाब सामने आने का ख़तरा होता है, जिससे दोनों पक्षों के बीच जंग का माहौल पैदा होता है जो कि समाज, विशेषकर नौजवान नस्ल के दिल में ग़ुस्से, बेचैनी और तनाव का कारण बनता है।

इसके विपरीत पाज़िटिव रवैये से सहन शक्ति को बल मिलता है, सामने वाला न चाहते हुए भी उसी भाषाशैली में जवाब देने पर बाध्य हो जाता है। ऐसे में सहनशक्ति और स्थिरता पैदा होती है, जिससे तीखी से तीखी आलोचना आसानी से बर्दाश्त की जा सकती है। बर्दाश्त और स्थिरता सब्र का ही दूसरा नाम है। सब्र यद्यपि एक मुश्किल काम है, मगर आलोचना की प्रतिक्रिया में सब्र करना एक ऐसी थैरेपी है जो इंसान को ईश्वर के क़रीब ले जाकर उसका महबूब बना देती है।

क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है कि, "अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है" ऐसे में जब अल्लाह का साथ हासिल हो जाए तो फिर इंसान के लिए तमाम मुश्किलें और परेशानियां कोई हैसियत नहीं रखतीं। ■■

लक्ष्यों और उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करने से मनुष्य और मानव समूह अस्थायी समस्याओं और कठिनाइयों में नहीं फंसते। निगाहें जब मंजिल पर टिकी होती हैं तो रास्ते की छोटी-छोटी परेशानियां बेमानी हो जाती हैं। जब हम एक लंबी यात्रा पर निकलते हैं, तो हमारी नज़र गंतव्य पर टिकी होती है, असमान रास्ते, बाधाएँ, गड्ढे और चट्टानें कभी भी हमारे ध्यान का केंद्र नहीं बनती हैं। यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए हम उनसे उतना ही व्यवहार करते हैं, जितना जरूरी है। हमारा फोकस रूट के बजाय डेस्टिनेशन पर है। अगर मंजिल तक पहुंचने का एकमात्र कठिन रास्ता जरूरी है तो हमें यात्रा की कठिनाई की परवाह नहीं है। इसके विपरीत जब हमारी यात्रा व्यर्थ और व्यर्थ हो यानि हम पैदल ही चल रहे हों, रास्ते में आने वाली हर छोटी-बड़ी समस्या हमें आकर्षित करती है। पथ हमारे ध्यान का केंद्र बन जाता है। रास्ते की विषमता हमें परेशान करती है और हम चलने का रास्ता खोज लेते हैं। रास्ते का हर फूल हमें आकर्षित करता है और इसी तरह हर काँटा भी। इससे पता चलता है कि रास्ते में भ्रमित होना इस बात का संकेत है कि यात्रा महत्वहीन, अर्थहीन और व्यर्थ है।

SALFIA UNANI MEDICAL COLLEGE
Darbhanga, Bihar

KANTI Monthly, New Delhi
SEPTEMBER 2021
Posted on 20-21 August 2021
Published on 18 August 2021
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2021-2023
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2021-2023
Total Pages with Cover: 52

Put Your Efforts & Earn More

Full time/ Part-time Job

Wanted

Dawat Media House (DMH) has designed a new project to generate business and share the profit with its executives. In the first phase, DMH has a plan to appoint part time or full time executives in the cities having a population of more than 10 lakhs.

What do they need to do?

1. Enroll subscription of various publications printed and digital editions.
2. Book the order for Markazi Maktaba books.
3. Get advertisement for the publications.

Necessary training will be provided

Email : mgrdawat@gmail.com | **9891160829**